रजिस्ट्री सं. डी एल—33001/97

REGISTERED NO. DL—33001/97

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 44] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 1, 1997 (कार्तिक 10, 1919)

No. 44] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 1, 1997 (KARTIKA 10, 1919)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	675
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1009
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	5
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1643
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उप-विधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1005
भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	1489
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं ।	3475
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	347
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला अनुपूरक	*

*प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	675
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1009
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	5
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1643
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1005
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	1489
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	3475
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	347
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	

* Folios not received.

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी की गई विधिसम नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 1997

सं. 81-प्रेज/97—राष्ट्रपति निम्नलिखित सैन्य अफसर को उनकी अति असाधारण वीरता के लिए "अशोक चक्र" प्रदान करने हेतु सहर्ष अनुमोदन करते हैं :

सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त (आईसी-53987), 11 गोरखा राइफल्स

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 20 जुलाई 1997)

20 जुलाई, 1997 को कश्मीर घाटी में उग्रवादियों से मुकाबला करते समय 1/11 गोरखा राइफल्स में सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त ने बड़ी मुश्किल से मिली गुप्त सूचना के आधार पर श्रीनगर में सैन्य कार्रवाई शुरू कर दी ।

भाड़े पर लिए गए विदेशी सैनिकों के एक दल ने चार दीवारी के ऊंची अहाते वाले लगभग सुरक्षित तिमंजिले मकान में मोर्चा-बंदी कर रखी थी जहां से पूरे क्षेत्र में बेहतर ढंग से गोलीबारी की जा सकती थी ।

उग्रवादियों ने सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त के सैन्य दल द्वारा घेरे जाने पर उन पर भारी गोलीबारी कर दी । उग्रवादियों ने इस मकान का, सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त द्वारा उग्रवादियों की गोलीबारी की बौछार से अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना दीवार फांदकर मकान के अंदर घुसकर वहां सनसनी फैलने के लिए बम विस्फोट किए जाने तक कुशलता से उपयोग कर उनके सैन्य दल के सभी हमलों को नाकाम कर दिया ।

सभी उग्रवादियों ने अपने दल पर की जा रही कारगर गोली-बारी को रोकने के लिए जबाबी गोलीबारी शुरू कर दी । तिस पर सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त अपनी आड़ से हट गए और ए के राइफल से गोलीबारी कर उग्रवादियों को खदेड़ने लगे ।

दोनों ओर से भीषण गोलीबारी हुई और उग्रवादियों ने भागने के लिए मकान के पीछे का दरवाजा खोल दिया । सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त ने यह भांपते हुए कि कुछ फंसे हुए उग्रवादी बचकर भागने की कोशिश कर रहे हैं, सामरिक सूझबूझ और चुस्ती से झटपट मोर्चा संभाल लिया बचने के मार्ग में आ पहुंचे । उग्रवादी हतोत्साहित होकर मकान से बाहर निकल आए और लगा-तार गोलीबारी करने लगे । तिस पर सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त ने अद्भुत साहस का परिचय देते हुए आमने-सामने की दुस्साहसपूर्ण मुठभेड़ में अपनी ए के 47 राइफल से दूसरे उग्रवादी को मार गिराया ।

इतने में दूसरे उग्रवादी ने ऊपर खिड़की से स्वचालित शस्त्र से अफसर के मुंह पर सीधे भारी गोलीबारी कर उन्हें घायल कर दिया । लहूलुहान और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद सेकेंड लेफ्टि पुनीत नाथ दत्त ने बड़ी फुर्ती से खिड़की से हथगोला फेंककर तीसरे उग्रवादी का काम तमाम कर दिया । इस हथगोले के फटने से मकान में भारी मात्रा में रखे गए विस्फोटक और गोलाबारूद भी फटकर नष्ट हो गए ।

इस कार्रवाई में सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त ने भाड़े पर लिए गए तीन खूंखार विदेशी सैनिकों को अकेले ही मार कर उनके गुप्त ठिकाने को भी नष्ट कर दिया । अंततः गंभीर रूप से घायल होने के कारण 20 जुलाई, 1997 को 1215 बजे उनके प्राण पखेरू उड़ गए ।

इस प्रकार सेकेंड लेफ्टि. पुनीत नाथ दत्त ने असाधारण वीरता, अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय देकर भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप अपने प्राण न्यौछावर कर दिए ।

एस. के. शरीफ, राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 82-प्रेज/97—राष्ट्रपति, असाधारण वीरता का प्रदर्शन करने के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :-

1. 14917753 सिपाही दया शंकर,
14 राष्ट्रीय राइफल्स
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 05 अगस्त, 1996)

05 अगस्त, 1996 को 14 राष्ट्रीय राइफल्स के सिपाही दया शंकर जम्मू व कश्मीर में बारामुल्ला जिले के लहरवालपुरा गांव संक्रियाओं के दौरान खोजी दल का एक हिस्सा थे ।

जैसे ही दल उस घर के नजदीक आगे बढ़ा, जहां आतंकवादी छिपे हुए थे, घर से लगभग 50 मीटर दूर एक खुले इलाके को पार करते समय सिपाही दया शंकर पर उग्रवादियों ने गोली चला दी। यह सोचकर कि उसके साथी खतरनाक स्थिति में होंगे, अपने घावों की परवाह न करते हुए, सिपाही दया शंकर ने अंदर छिपे उग्रवादी की स्थिति का जायजा लेकर अपने हथियार से फायर किया और नजदीक से गोलीबारी करके उसे मार गिराया। सिपाही दया शंकर नीचे गिर पड़े, उन पर एक बार फिर आतंकवादी ने गोली चला दी। छिपे हुए एक अन्य उग्रवादी ने उन पर गोली चला दी ताकि वे आगे न बढ़ पाएं। गंभीर रूप से घायल सिपाही दया शंकर ने जब यह देखा कि केवल वे उग्रवादी तक पहुंच सकते हैं तो वे सरक कर उसकी तरफ बढ़े और कुछ दूरी से गोला फेंक कर उसे वहीं मार गिराया इस तरह उन्होंने दो उग्रवादियों को मार गिराया। दो राइफलें और एक पिस्तौल बरामद की गई। सिपाही दया शंकर इस लड़ाई में 05 अगस्त, 1996 को 1700 बजे घटनास्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए थे।

इस प्रकार सिपाही दया शंकर ने अपनी जान की बाजी लगाकर असाधारण वीरता, अदम्य शौर्य भावना और अत्यंत कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. मेजर कृष्णा मूर्ति बालासुब्रामणयम (आई सी-42011) 34 राष्ट्रीय राइफल्स

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 12 अगस्त, 1996)

12 अगस्त, 1996 को 0330 बजे मेजर कृष्णा मूर्ति बालासुब्रामण्यम को यह सूचना मिली कि जम्मू-कश्मीर सेक्टर में श्री नगर के जिला बड़गांव में रैयार यैश्र गांव के एक घर में एक खूंखार उग्रवादी छिपा हुआ है।

अफसर एक खोजी दल के साथ वहां पहुंचे और जैसे ही वे घर में घुसे, उग्रवादी ने उन पर गोली चला दी और उन्हें घायल कर दिया। अफसर ने तत्काल गोली दागी और उग्रवादी को वहीं मार गिराया। एक और उग्रवादी जो पास के कमरे में छिपा हुआ था, उसने बीच के दरवाजे से ही गोली चलायी और अफसर को और अधिक जख्मी कर दिया मेजर कृष्णा मूर्ति बालसुब्रमण्यम जो हालांकि बुरी तरह से घायल हो चुके थे, रेंगते हुए आए और दूसरे कमरे में हथगोला फेंका। उग्रवादी जो हथगोले के टुकड़ों से घायल हो गया था, उसने मेजर कृष्णा मूर्ति बालासुब्रामण्यम पर गोली चलाने की कोशिश की। किन्तु, इससे पहले कि वह गोली चला पाता, मेजर कृष्णा मूर्ति बालासुब्रामण्यम ने उसे गोली मारकर वहीं ढेर कर दिया। बुरी तरह से जख्मी होने के कारण, मेजर कृष्णा मूर्ति बाला सुब्रमण्यम बाद में 12 अगस्त, 1996 को 0700 बजे अपने घातक घावों के फलस्वरूप वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार मेजर कृष्णा मूर्ति बालासुब्रामण्यम ने अपने प्राणों की आहुति देते हुए उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस और कर्तव्य के प्रति उच्च कोटि के समर्पण भाव का परिचय दिया।

3. 4072221 राइफलमैन संजय साही 15 गढ़वाल राइफल्स

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 5 फरवरी, 1997)

05-06 फरवरी, 1997 को खास सूचना के मिलने पर नागालैंड के फेक जिला के जामई गांव में एक आपरेशन शुरू किया गया। राइफलमैन संजय साही कमांडिंग अफसर की क्विक रिएक्शन टीम के सदस्य थे।

05 फरवरी, 1997 को इस दस्ते ने प्रतिबंधित संगठन के एक अधिकारी के एक स्वयंभू सिविल प्रशासन अफसर को गिरफ्तार किया। भूमिगत से मौके पर पूछताछ करने से दस्ते को एक और भूमिगत का पता चला। तदनुसार यह दल जामई गांव में उस भूमिगत के घर की ओर चल पड़ा।

राइफलमैन संजय साही ने अपनी इच्छा से अपनी टीम का नेतृत्व किया और घर पर छापा मारा। दरवाजा खटखटाने पर, जब कोई जवाब नहीं आया तो उन्होंने दरवाजा तोड़ दिया। दरवाजा खुलते ही संजय साही पर अंदर से फायर किया गया और उसकी बाई बाजू पर गोली लगी। रात के अंधेरे में उसने देखा कि दो भूमिगत पिछले दरवाजे से निकल कर भाग रहे हैं।

अपने जख्मी होने की परवाह किए बिना राइफलमैन संजय साही ने उनका पीछा किया और अपने हथियार से फायर करके एक भूमिगत को वहीं उसी समय मार दिया। वह दूसरे भूमिगत की ओर झपटे ही थे कि वह पलटा और एक ए के 47 से गोलाबारी की। इस बार गोली लगने से राइफलमैन संजय साही गंभीर रूप से घायल हो गए और वहीं गिर गए। फिर भी उसने अपने हथियार से गोलाबारी जारी रखी, जिसके कारण न तो भूमिगत उनका हथियार छीन सका और न ही उसके साथी हताहत हुए। अपने मिशन को पूरा करने के बाद इस बहादुर सिपाही ने 06 फरवरी, 1997 को 0330 बजे दम तोड़ दिया।

इस प्रकार राइफलमैन संजय साही ने भूमिगतों के साथ लड़ते हुए कर्तव्यपरायणता से बढ़कर अदम्य साहस, समर्पण भाव का परिचय दिया और सर्वोच्च बलिदान किया।

एस. के. शरीफ, राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 83-प्रेज/97—राष्ट्रपति शत्रु का मुकाबला करने में वीरतापूर्ण कार्यों के लिए निम्नलिखित कार्मिक को 'वीर चक्र' प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं।

1. 2980642 नायक वेद प्रकाश, 15 राजपूत

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 अगस्त, 1996)

31 अगस्त, 1996 को सियाचिन ग्लेशियर के उत्तरी भाग में स्थित चौकी पर दुश्मन भारी गोलीबारी करने लगा। दुश्मन

की गोलाबारी जारी रहने के कारण उसके मोर्चे पर जवाबी कारगर फायर करना जरूरी हो गया । नायक वेद प्रकाश एक अफसर के साथ बाहर आए और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना खुले में पोजीशन लेकर 84 एम एम राकेट लांचर से दुश्मन की चौकी पर गोलाबारी करने लगे ।

इसके बाद नायक वेद प्रकाश गोला बारूद बंकर और फायरिंग पोजीशन के बीच घूमने लगे । जब वे तीसरी बार ऐसा कर रहे थे, तभी दुश्मन का एक गोला बंकर के काफी नजदीक फटा और उसकी एक किरच उनकी छाती पर लग गई । गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने एक बार फिर जाने का प्रयास किया परन्तु गोला बारूद बंकर के पास एकाएक गिर गए और अंततः अपने जख्मों के कारण 2245 बजे वे वीरगति को प्राप्त हो गए ।

नायक वेद प्रकाश ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए शत्रु का मुकाबला करने में उच्चतम कोटि की वीरता और साहस का परिचय दिया और अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया ।

एस. के. शरीफ, राष्ट्रपति का सचिव

सं. 84-प्रेज/97—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :

1. फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप खजूरिया (20291) एयरोनाटिकल इंजीनियरिंग (इलेक्ट्रोनिक्स)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 मार्च, 1993)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप खजूरिया को सितम्बर, 1989 में भारतीय वायु सेना में कमीशन प्राप्त हुआ । आज कल ये वायु सेना की सिग्नल यूनिट में तैनात हैं ।

02 मार्च, 1993 की रात को, जब फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप खजूरिया जी सी ए में कार्यरत थे, ड्यूटी पर तैनात नियंत्रकों की बातचीत में इन्हें पता चला कि फ्लाइंग अफसर एसएस चौहान 20996 एफ पी द्वारा उड़ाया जा रहा वायुयान रनवे पर उतरते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो गया है । ये तुरन्त ही घटनास्थल के लिए चल पड़े । लगभग 10 मिनट में वे वहां पहुंच गए । वहां पहुंचने पर इन्होंने देखा कि विमान में लगी आग को बुझाया जा रहा था और पायलट अभी काकपिट में ही था और उसकी कैनोपी भी बंद थी । अपनी जान की परवाह किए बिना ये पायलट को बचाने के लिए कैनोपी की तरफ बढ़े । वहां खड़े हुए व्यक्ति भी जो कि अभी तक केवल किसी के साहसिक नेतृत्व की ही प्रतीक्षा कर रहे थे, आग में फंसने की परवाह किए बिना बेहोश पड़े पायलट को बचाने में लग गए । पायट को बचाने के तुरन्त बाद ही विमान की ईंधन टंकी फट गई ।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप खजूरिया ने अपनी जान जोखिम में डालकर और संकट के समय उचित नेतृत्व देकर एक व्यक्ति की जान बचाई ।

2. श्री पशुपति नाथ राय,
इलाहाबाद बैंक,
पटना (बिहार)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 जुलाई, 1995)

पटना के इलाहाबाद बैंक, मुख्य शाखा के एक ग्राहक मैसर्स पाटलीपुत्र ट्रेडिंग कार्पोरेशन प्रति सप्ताह 3/4 बार 2/3 लाख रुपए इस बैंक में जमा करते हैं । दिनांक 19-7-1995 को लगभग 10.25 बजे प्रातः कम्पनी का सेल्समैन मैटाडोर वेन से इस शाखा में आया । चार बदमाश, जो फार्म के सेल्समैन की गतिविधियों पर नजर रखे हुए थे कि वह अक्सर बैंक में बड़ी रकम जमा करने के लिए आता रहता है, सेल्समैन के इन्तजार में बैठे थे और जैसे ही वैन का पिछला दरवाजा खुला उनमें से तीन बदमाश हाथों में हथियार लिए सेल्समैन पर कूद पड़े । उनमें से एक अपराधी ने सेल्समैन पर गोली चलाई जिससे उनकी बाई आंख के पास का मांस छिल गया । इस बीच एक सशस्त्र अपराधी ने सेल्समैन से रुपयों वाला बैग खींच लिया और भाग गया ।

बैंक के एक क्लर्क व रोकड़िया श्री पशुपति नाथ राय जोकि उस समय शाखा के मुख्य प्रबंधक के पास थे, बाहर का शोर सुन कर तुरन्त बाहर निकले । क्षणिक भी इन्तजार किए बिना तथा अपने जीवन की तनिक भी परवाह किए बिना वे सशस्त्र बदमाशों के पीछे भागे । वस्तुतः निहत्थे होने के कारण वे उस बदमाश को रोक नहीं पाए । श्री पशुपति नाथ राय के निस्वार्थ और साहसिक कार्य से प्रेरित होकर कुछ पुलिसकर्मी और अन्य लोग भी उनके साथ हो लिए । श्री राय ने आखिर एक बदमाश को पकड़ लिया और उसके साथ भिड़ गए । इससे दूसरे बदमाश भी पकड़ में आ गए । चार बदमाशों में से दो पुलिस के साथ हुई आपसी गोलीबारी में मारे गए ।

श्री राय ने सशस्त्र डाकू को पकड़ने में अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय दिया ।

3. कैप्टन शांतनु नाग
(आई सी-44269),
3 राष्ट्रीय राइफल्स

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 मार्च, 1996)

12 मार्च, 1996 को 3 राष्ट्रीय राइफल्स के कैप्टन शांतनु नाग जब अपनी टीम के साथ जम्मू-कश्मीर के अनंत नाग जिले में स्थित अशाजीपुर गांव के एक घर की तलाशी ले रहे थे जब वे अचानक स्वचालित हथगोले से हो रही भारी गोलाबारी की चपेट में आ गए । उनके दल के दो प्रमुख सदस्य एकदम जख्मी हो गए । जब कैप्टन शांतनु नाग दोनों जख्मी कैजुअल्टियों को गोलाबारी वाले स्थान से तेजी से हटाने की कोशिश कर रहे थे तभी वे खुद बंदूक की गोली लगने से जख्मी हो गए ।

यह समझते हुए कि इन कैजुअल्टियों को तुरन्त निकालकर ले जाना जरूरी है, कैप्टन शांतनु नाग ने अपने दल के सदस्यों को आदेश दिया कि वे उस भवन से निकल जाएं । साथ ही वह

महसूस करते हुए कि उग्रवादियों को छोड़ देने से उन्हें और भी ज्यादा नुकसान पहुंचेगा, ऐसी अवस्था में अपनी टांग और जांघ के जख्मी होने के बावजूद उन्होंने नेतृत्व करने का निर्णय लिया। वे अपनी राइफल्स से छिपने के स्थान पर गोलाबारी करते हुए आगे बढ़े। उनकी अपनी गोलियां खत्म हो गईं तो उन्होंने अपनी बंदूक को फेंक दिया और निहत्थे ही आगे बढ़कर दो उग्रवादियों को दबोच कर पीछे की ओर गिरा दिया और इस प्रकार उन्होंने अपने जख्मी सलाथी दल को बचा लिया। ऐसा करते समय एक गोली उनकी बगल को चीरती हुई, छाती को पार कर गई। इस प्रकार उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया।

इस प्रकार कैप्टन शेलनू नाग ने अपने फर्ज से भी आगे बढ़कर असाधारण और साहस का प्रदर्शन करते हुए अपने प्राण न्यौछावर करके अपने साथियों की प्राण रक्षा की।

4. 4057065 कम्पनी हवलदार मेजर ध्यान सिंह
3 राष्ट्रीय राइफल्स

(मरणोपरांत)

पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 मार्च 1996

12 मार्च, 1996 को 3 राष्ट्रीय राइफल्स के कम्पनी हवलदार मेजर ध्यान सिंह जम्मू और कश्मीर के जिला अनंत नाग स्थित अशाशपुर में खोजी दल के सदस्य थे।

घर की तलाशी लेते समय जब कम्पनी हवलदार मेजर ध्यान सिंह और एक अन्य रैंक एक कमरे में घुसे तो उन पर अचानक भारी गोलीबारी की गयी जिससे वे घायल हो गए। इनके कम्पनी कमांडर और प्लाटून कमांडर भी ज्वान को कमरे से बाहर निकालने की कोशिश में गोलियां लगने से घायल हो गए।

घायल कम्पनी हवलदार मेजर ध्यान सिंह अपनी राइफल से फायर करते हुए कमरे से बाहर निकल आए। उन्हें सुरक्षा क्रिलिंग से बाहर निकलने का आदेश दिया गया। उन्होंने अपने कम्पनी कमांडर को अपनी राइफल से फायर करते हुए कमरे में घुसते देखा। अपने कम्पनी कमांडर को अकेला कमरे के अंदर जाते देखकर, वे अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बगैर अपने कम्पनी कमांडर के पीछे कमरे में घुस गए उसी क्षण एक उग्रवादी छूट गया और उसने उनके कम्पनी कमांडर पर गोली चला दी। कम्पनी हवलदार मेजर ध्यान सिंह गोलीबारी और अपने कम्पनी कमांडर के बीच कूद पड़े और गोलियों की बौछार को अपने शरीर पर झेल लिया और एक गोली उनकी रीढ़ की हड्डी में घुस गयी। उन्होंने एक ऐसे साथी के लिए अपना जीवन न्यौछावर किया जिसने उन्हें एक सच्चे सैनिक के गुणों का पाठ पढ़ाया था।

इस प्रकार कम्पनी हवलदार मेजर ध्यान सिंह ने अपने प्राण न्यौछावर करते हुए अपने साथी की जान बचाने में वीरता और साहस का प्रदर्शन किया।

5. श्री पारसी जगन,
स्टेट बैंक,
वेन्नल (आंध्र प्रदेश)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 मई, 1996)

6 मई, 1996 को आंध्र प्रदेश के निजामाबाद जिले के स्टेट बैंक आफ हैदराबाद की वेन्नल "बी" शाखा में एक सशस्त्र डकैती हुई। ग्राहकों के बैंक से चले जाने के बाद दिन में लगभग 2.40 बजे पिस्तौलों और चाकू से लैस तीन व्यक्तियों ने बैंक के अहाते में मोर्चा संभाल लिया। एक बदमाश प्रधान रोकड़िया को धमकी देता हुआ नगदी काउंटर के सामने खड़ा हो गया। जबकि दूसरा व्यक्ति पिस्तौल लिए हुए शाखा प्रबन्धक के पास खड़ा हो गया और तीसरा व्यक्ति दफ्तरी की ओर चाकू निकाल कर बैंकिंग हाल के विकेट गेट के पास खड़ा हो गया। उन्होंने कहा कि वे नक्सलवादियों के भीमगल दालान से हैं। शाखा प्रबंधक श्री पी जगन ने उन व्यक्तियों से कहा कि वे अपना विरोध स्कोल बुक में दर्ज कर दें और जनता के धन को न लूटें। बदमाश इस बात से सहमत नहीं हुए। एक व्यक्ति रोकड़ काउन्टर के सामने आया और शाखा प्रबंधक पर नजर रखते हुए दूसरे व्यक्ति को रोकड़ इकठ्ठा करने का अवसर दिया। उन्होंने लगभग 1.67 लाख रुपए इकठ्ठे कर लिए और अपने साथ लाए बैग में भर लिए। उन्होंने डराने के लिए दो गोलियां चलाईं जिसमें से एक शाखा प्रबंधक को निशाना बनाते हुए तथा दूसरी गोली शाखा स्टाफ को दूर रखने के लिए हवा में चलाई गई थी। जैसा ही वे अपराधी कुछ देर के लिए रुके श्री जगन कूदे और एक अपराधी की गर्दन पकड़ ली जिससे रोकड़ वाला बैग उसके हाथ से छूट गया। यह देख कर अन्य दो बदमाश अपने उस साथी को बचाने के लिए आए जिसके हाथ से बैग छूट गया था। इस हाथापाई में नगदी वाला बैग फट गया और उसमें से कुछ नगदी जमीन पर गिर गई। इसी समय मुख्य रोकड़िया और दफ्तरी शाखा प्रबंधक की सहायता के लिए दौड़े तथा गिरे हुए रुपयों को उठाकर रोकड़ केबिन में डाल दिया। शाखा स्टाफ का शोर सुनकर सड़क पर जा रहे ग्रामवासी बैंक की ओर दौड़े। उस समय तक दो अपराधी शाखा के अहाते के बाहर खड़ी कार में भाग चुके थे। एक व्यक्ति पकड़ लिया गया। उसे काबू में करके एक कमरे में धकेल दिया गया। बाद में पुलिस ने शेष दो अपराधियों को भी पकड़ लिया। सारा रोकड़ बचा लिया गया।

श्री पारसी जगन ने सशस्त्र डाकुओं पर काबू पाने में असाधारण बीरता, दृढ़ निश्चय, सूझबूझ और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

6. श्री के. दत्तात्रेय शेट्टी,
सिंडिकेट बैंक,
नरेन्द्र (कर्नाटक)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 जून, 1996)

8 जून, 1996 को सिंडिकेट बैंक की नरेन्द्र शाखा में डाका डालने का प्रयास किया गया। डाका डालने के इस प्रयास को शाखा प्रबंधक श्री के. दत्तात्रेय शेट्टी और सब-स्टाफ सदस्य श्री यशवंत डोंडामानी ने विफल कर दिया।

पिस्तौलों से लैस दो डाकू दिन के लगभग 11.30 बजे बैंक में घुसे। एक सशस्त्र डाकू ने अपनी पिस्तौल शाखा प्रबंधक श्री शेट्टी पर तान दी और रोकड़ उसके हवाले करने को कहा। दूसरे डाकू ने स्टाफ के सदस्यों और ग्राहकों की ओर अपनी

पिस्तौल तानते हुए उन्हें बाहर जाने का आदेश दिया । जब ग्राहक बाहर भागने लगे तभी शाखा प्रबंधक की ओर पिस्तौल ताने खड़े डाकू ने उन पर गोली चला दी । सौभाग्यवश गोली नहीं चली । इसका फायदा उठाते हुए श्री शेट्टी उस डाकू पर झपट पड़े और उसे दबोचकर निष्क्रिय कर दिया । उस समय शाखा के सब-स्टाफ श्री डांडामानी दूसरे डाकू के पीछे खड़े थे । जैसे ही उन्होंने देखा कि श्री शेट्टी पहले डाकू के साथ भिड़ गए हैं उन्होंने स्टूल उठाकर दूसरे डाकू पर फेंका । स्टूल लगने के बाद दूसरे डाकू का संतुलन बिगड़ गया और वह भी श्री डांडामानी और अन्यों के द्वारा निष्क्रिय कर दिया गया । स्टाफ के सदस्यों और ग्राहकों ने दोनों डाकुओं को काबू में कर लिया और उन्हें पुलिस को सौंप दिया ।

श्री दत्तात्रेय शेट्टी ने वीरता, सूझबूझ और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया तथा अपनी जान की परवाह न करते हुए डकैती के प्रयास को विफल कर दिया ।

7. श्री यशवंत डांडामानी,
सिंडिकेट बैंक,
नरेन्द्र (कर्नाटक)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 जून, 1996)

8 जून, 1996 को सिंडिकेट बैंक की नरेन्द्र शाखा में डाका डालने का प्रयास किया गया । डाका डालने के इस प्रयास को शाखा प्रबंधक के दत्तात्रेय शेट्टी और सब-स्टाफ सदस्य श्री यशवंत डांडामानी ने विफल कर दिया ।

पिस्तौलों से लैस दो डाकू प्रातः लगभग 11.30 बजे बैंक में घुसे । एक सशस्त्र डाकू ने शाखा प्रबंधक श्री शेट्टी को अपनी पिस्तौल का निशाना बनाते हुए रोकड़ उसे सौंप देने को कहा । दूसरे डाकू ने स्टाफ के सदस्यों और ग्राहकों को अपनी पिस्तौल का निशाना बनाते हुए उन्हें बाहर जाने का आदेश दिया । ग्राहक जब बाहर की ओर भागने लगे तो पहले डाकू ने, जो शाखा प्रबंधक को अपनी पिस्तौल का निशाना बनाए हुए थे, ने उन पर गोली चला दी । सौभाग्यवश यह गोली निशाने पर नहीं लगी । इसका फायदा उठाते हुए श्री शेट्टी उस डाकू पर झपटे, उससे उलझ पड़े और उसे धराशायी कर दिया । उस समय शाखा के सब-स्टाफ के सदस्य श्री डांडामानी दूसरे डाकू के पीछे खड़े थे । जैसी ही उन्होंने देखा कि श्री शेट्टी पहले डाकू के साथ भिड़ गए हैं उन्होंने स्टूल उठाकर दूसरे डाकू पर फेंका । स्टूल लगने के बाद दूसरे डाकू का संतुलन भी खो गया और वह भी श्री डांडामानी और अन्यों के द्वारा धराशायी हो गया । स्टाफ के सदस्यों और ग्राहकों ने दोनों डाकुओं को नियंत्रण में कर लिया और उन्हें पुलिस को सौंप दिया ।

श्री डांडामानी ने प्रतिकूल परिस्थितियों में सूझबूझ और साहस का परिचय दिया तथा वे दूसरे डाकू को निहत्था करने में सहायक हुए अन्यथा वह स्टाफ के सदस्यों और ग्राहकों पर गोली चला कर उनकी जान खतरे में डाल सकता था ।

8. मेजर जयंत कुमार तिवारी
(आई सी-40882)
1/5 गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 जुलाई, 1996)

31 जुलाई, 1996 को उग्रवादियों के छिपने के बारे में सूचना मिली । रोक दल को अवस्थित करने के बाद, मेजर जयन्त कुमार तिवारी के नेतृत्व में जम्मू व कश्मीर क्षेत्र की वाटनर गली में 0430 बजे तलाशी शुरू की की गई ।

0700 बजे अग्र पंक्ति के स्काउट ने 5-6 उग्रवादियों को देखा । कम्पनी कमांडर द्वारा कार्य सौंपने के बाद एक अन्य रैंक ने गोलाबारी शुरू की जिसके कारण दो उग्रवादी मारे गए और अन्य भाग निकले ।

खोजा पीछा करने के बाद, मेजर जयन्त कुमार तिवारी ने एक विदेशी उग्रवादी को मार गिराया और इस प्रक्रिया के दौरान उनकी बायीं भुजा पर ए के 47 राइफल की गोलियां लग गईं । इसी बीच एक अन्य रैंक ने उग्रवादियों का ध्यान बंटाने के लिए उन्हें उलझाए रखा । गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद मेजर जयंत कुमार तिवारी ने चौथे उग्रवादी पर गोली चलाई और उसे मार गिराया । मेजर जयंत कुमार तिवारी ने अपनी गम्भीर चोट की परवाह किए बिना तथा भारी गोलीबारी के बीच अपने दल को सफलतापूर्वक कार्य निष्पादन के लिए प्रेरित किया जिसके परिणाम-स्वरूप चार उग्रवादी मारे गए तथा भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद हुआ ।

इस प्रकार मेजर जयन्त कुमार तिवारी ने उच्चकोटि की असाधारण वीरता और साहस का परिचय दिया ।

9. 14694721 नायक/चालक प्लान्ट मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट विदेशी सिंह
सीमा सड़क संगठन ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 2 अगस्त, 1996)

एक परियोजना के नायक/चालक प्लान्ट मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट विदेशी सिंह को त्रिपुरा में खोवाई में सड़क पर सुरक्षा गार्ड के रूप में तैनात किया गया था ।

दिनांक 02 अगस्त, 1996 को 0730 बजे सहायक अभियंता श्री. एस. चौगले, जबकि 1,41,500 रुपए भुगतान के लिए लेकर जा रहे थे, के साथ तैनात किया गया था । लगभग 12.30 बजे जब उनका दल सड़क के एक मोड़ पर पहुंचा तो उन्होंने देखा कि सड़क पर पत्थर डालकर बन्द की हुई है । श्री चौगले अपने चालक के साथ उन पत्थरों को हटाने के लिए वाहन से नीचे उतरे । वे छोटे हथियारों से की जा रही भारी गोली-बारी के मध्य घिर गए तथा दोनों घायल हो गए । जैसे ही उन्होंने रुन्दक चलने की आवाज सुनी तथा अधिकारी और सहायक को भूमि पर घायल अवस्था में देखा, वैसे ही नायक विदेशी सिंह वाहन में कूद पड़े । अपनी जान की परवाह न करते हुए

उन्होंने 6 आतंकवादियों पर धावा बोला और गोलीबारी शुरू की जिसमें एक आतंकवादी घायल हुआ। इसके बाद दोनों ओर से हुई गोलीबारी में उन्होंने आतंकवादियों को साहस और निडरता के साथ खदेड़ दिया और वे लोग एक देशी तमंचा छोड़कर भाग गए।

इस प्रकार, नायक डी. पी. एम. टी. विशंभी सिंह ने अदम्य साहस, असाधारण वीरता, सूझ-बूझ और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की कतई परवाह न करते हुए उन्होंने जानमाल तथा सरकारी धन को बचाया।

10. 14486426 नायक जंगबीर सिंह,
5 डिटैचमेंट/ई. सी. संपर्क यूनिट।
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 अगस्त, 1996)

इनफैंट्री कोर के नायक जंगबीर सिंह को असम में बारपेटा के भरभसला गांव के अंदर और उसके आसपास कुख्यात उल्फा संगठन की गतिविधियों से संबंधित व्यवहार्य आसूचना प्राप्त करने का कार्य सौंपा गया था। नायक जंगबीर सिंह के साथ एक प्रहार करने वाली टीम लगाई गई थी कि वह प्राप्त हुई आसूचना पर जवाबी कार्रवाई कर सके।

नायक जंगबीर सिंह को अपने सूचना देने वालों के जरिए पता चला कि एक लिंकमैन और उल्फा संगठन के कई सदस्य वहां मौजूद हैं। 19/20 अगस्त, 1996 की रात प्रहार करने वाली टीम ने उन तीन घरों के समूह पर छापा मारने की योजना बनाई जो छिपने के ठिकाने के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे बताए गए थे।

जैसे ही टीम ने घरों के समूह को चारों ओर से घेरा, नायक जंगबीर सिंह ने अपनी इच्छा से एक रुख टीम का नेतृत्व किया। जैसे ही वे घरों के नजदीक पहुंचे वहां से टीम पर दोनों तरफ से गोलीबारी की गई। घेरे में आए टीम के लीडर और नायक जंगबीर सिंह ने घात की जवाबी कार्रवाई के तौर पर फौरन गोलाबारी शुरू कर दी।

जवाबी गोलीबारी करते हुए नायक जंगबीर सिंह फायर के धमाके में हताहत हो गए। हालांकि वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे लेकिन वे अपनी टीम के लीडर के साथ-साथ, लेन के परले सिरे तक रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे और तब तक गोलीबारी करते रहे जब तक वे 20 अगस्त, 1996 को अपने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त न हो गए। नायक जंगबीर सिंह द्वारा लेन के परले सिरे तक जाने से आतंकवादियों की हिम्मत टूट गई और उन्हें अपने छिपने का स्थान छोड़ कर भागना पड़ा।

इस प्रकार, नायक जंगबीर सिंह ने पराक्रम के वीरोचित कार्य, अदम्य इच्छाशक्ति और कुख्यात उल्फा संगठन के विरुद्ध लड़ते हुए अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की कतई परवाह न करने का परिचय दिया।

11. दशरथ,
एल. एस. सी. डी. II
17380 डी।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अगस्त, 1996)

दशरथ, एल. एस. सी. डी. 2 वूलर झील में संक्रिया रक्षक के लिए जम्मू-कश्मीर में तैनात किए गए डिटैचमेंट के सदस्य थे।

22 अगस्त, 1996 को गांव तलामुल्ला में छिपे कश्मीरी उग्रवादियों को पकड़ने के लिए 13 आर आर बटालियन के साथ संयुक्त रूप से घेराबंदी और तलाशी कार्रवाई करने के दौरान 13 आर आर बटालियन के सैन्य दलों पर उग्रवादियों ने अचानक भारी गोलाबारी शुरू कर दी। मौजूदा सामरिक परिस्थिति की नजाकत को पहचानते हुए लेफ्टिनेन्ट गौरीनन्दन सदाशिव मालकर ने झील के सामने से उग्रवादियों पर हमला करने के लिए आक्रमण का दूसरा गलियारा खोलने के लिए अपने सैन्य दल को तुरन्त आगे बढ़ने को कहा इस स्थिति में दशरथ एल एस डी दल के एल एम जी मैन थे, ने उग्रवादियों पर भारी गोलाबारी की और सामरिक महत्व के उस ठिकाने को छीन लिया जिसका उग्रवादी अब तक फायदा उठा रहे थे। आपरेशन के दौरान एक खूंखार उग्रवादी मारा गया था।

एक बार हमारे सैन्य दलों द्वारा सामरिक फायदा उठा लेने पर यह टीम उस क्षेत्र से भागने वाले उग्रवादियों पर घात लगाने के लिए दलदल के अंदर काफी आगे तक गई और वहां पर विकट परिस्थितियों में चार घंटे तक इंतजार किया। लगभग 06.45 बजे झील के दलदल से बचते हुए भागता हुआ एक उग्रवादी नजर आया। दशरथ, एल एस ने अपनी टीम के लीडर के साथ फौरन उग्रवादी को घेरा और उसको जीवित पकड़ने की कोशिश की। उग्रवादी ने छद्म भेष धारण कर रखा था और जैसे ही उसने बचकर निकलने की चेष्टा की तो दशरथ, एल एस ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी चिंता किए बिना उग्रवादी पर झपट पड़े और उसको पकड़ लिया। उग्रवादियों का सामना करने में उन्होंने असाधारण साहस, दृढ़ इच्छा शक्ति और सूझबूझ का परिचय दिया।

12. फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप जैन (19534),
उड़ान (पायलट)।
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 अगस्त, 1996)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप जैन, उड़ान पायलट 10 दिसम्बर, 1994 से हैलिकाप्टर यूनिट में तैनात किए गए थे। वे भारतीय वायुसेना के एक अनुशासित और कर्तव्यनिष्ठ अफसर थे।

अगस्त, 1996 के महीने में फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप जैन को आपरेशन मेघदूत क्षेत्र में हवाई अनुरक्षण के लिए तैनात किया गया था। इस दौरान, दुश्मन ने अपनी सेनाएं दक्षिणी ग्लेशियर

क्षेत्र में दुबारा तैनात कर दी थीं और कमान पोजिशनों पर अपने नए बंकर स्थापित कर लिए थे जिससे भारतीय सेना की चौकियों के लिए प्रत्यक्ष खतरा पैदा हो गया था । अपनी चौकियों तक पहुंचना भी हमारे लिए बहुत कठिन हो गया था क्योंकि हेलिकाप्टरों द्वारा जिस मार्ग से चौकियों तक पहुंचा जाता था वहां दुश्मन लगातार नजर रख रहा था । यह बात बहुत चिंताजनक थी क्योंकि इन परिस्थितियों में हमारी चौकियों को वायु रक्षा भी प्राप्त नहीं हो पा रही थी । अपनी सेनाओं को वहां से हटा देना भी राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं समझा गया ।

इसलिए, यह निर्णय लिया गया कि होशियार क्षेत्र की महत्वपूर्ण चौकी की रक्षा के लिए कुछ समर्पित हवाई अनुरक्षी सार्टियां वहां भेजी जाएं। फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट संदीप जैन को इन विशेष मिशनों का कैप्टन नियुक्त किया गया । उन्हें इस बात की पूरी जानकारी भी दी गई थी कि इस मिशन में कितना जोखिम है । किन्तु किसी भी जोखिम की परवाह किए बिना फ्लाइट लैफ्टिनेंट संदीप जैन के कमानाधीन कर्तव्यनिष्ठ कर्मीदल ने बड़ी बहादुरी और समझदारी से इस चुनौतीपूर्ण कार्य का बीड़ा उठाया । ऐसे दो मिशन दुश्मन द्वारा बाधाएं डालने के बावजूद पूरी तरह सफल हुए । किन्तु 26 अगस्त, 1996 को तीसरी सार्टी के दौरान सामान गिराने के बाद हमारे हेलिकाप्टर को दुश्मन की थल सेनाओं ने घेर लिया, जिसमें फ्लाइट लैफ्टिनेंट संदीप जैन और उनका कर्मीदल मारा गया ।

फ्लाइट लैफ्टिनेंट संदीप जैन ने दुश्मन के खतरे को जानते हुए भी इस कठिन कार्य का बीड़ा उठाया और अपने अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए राष्ट्र के हित में अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान कर दिया ।

13. 9415627 हवलदार किशोर राई,
6/11 गोरखा राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 सितम्बर, 1996)

03 सितम्बर, 1996 को लगभग 14.00 बजे हवलदार किशोर राई जम्मू और कश्मीर के पीर पंजाल रेंज (उच्च लुंगाहा क्षेत्र) में नियंत्रण रेखा के अपनी तरफ वाले हिस्से में स्थित गहरे नाले से गुजर रहे तलाशी/क्षेत्रीय गश्ती दल की अगुवाई कर रहे थे ।

रोशनी बहुत कम थी । सीधे कटाव के नजदीक नाले की तलाशी लेते हुए गश्ती दल की मुठभेड़ अचानक पूरी तरह से शस्त्रों से लैस उग्रवादियों से हो गई । तुरन्त दोनों तरफ से भारी गोलीबारी होने लगी । राष्ट्रविरोधी तत्वों ने गोलीबारी शुरू कर दी । दोनों तरफ से लगातार हो रही भारी गोलीबारी के दौरान अगले स्काउट के पेट में बंदूक की गोली से चोटें लगीं । एक सैनिक के हताहत होने के बावजूद हवलदार किशोर राई ने उग्रवादियों के विरुद्ध लगातार आक्रामक कार्रवाई जारी रखी । 17.00 बजे तक हवलदार किशोर राई की गश्ती दल की कार्रवाई के कारण उग्रवादी काफी दबाव में आ गए थे और वे पीछे घने जंगल में भाग निकले ।

इस बीच हवलदार किशोर राई की कवर गोलीबारी में दल को नजदीक जाने के आदेश दिए गए ।

दल शीघ्र ही उग्रवादियों की अचूक गोलाबारी से घिर गया तथा निकट नहीं पहुंच पाया अंधेरा हो रहा था और हवलदार किशोर राई ने यह महसूस करते हुए कि उग्रवादी अंधेरे में, घने जंगल में से भागने का प्रयास करेंगे, बचे हुए गश्ती दल को उग्रवादियों को उलझाए रखने के आदेश दिए और स्वयं गहन गोलीबारी के बीच में रेंगते हुए तथा अत्यंत उबड़-खाबड़ क्षेत्र से गुजरते हुए उग्रवादियों के नजदीक पहुंच गए । इन्होंने उन तीन उग्रवादियों का सिर काट दिया जो दल को आगे बढ़ने से रोक रहे थे । हवलदार किशोर राई की इस साहसिक कार्रवाई के परिणामस्वरूप लगभग पांच घंटे चली गोलीबारी में अंततः सात खूंखार उग्रवादियों को मार गिरा दिया गया ।

इस प्रकार हवलदार किशोर राई ने उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में असाधारण शौर्य और उच्चकोटि की वीरता का प्रदर्शन किया ।

14. लैफ्टिनेन्ट कर्नल बचित्तर सिंह (आई सी-37392)
35 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 सितम्बर, 1996)

29 सितम्बर, 1996 को जम्मू व कश्मीर के बडगांव जिले के बुगरगांव में एक खोजी मुठभेड़ मुठभेड़ संक्रिया संचालित की गई थी । पंजाब रेजिमेन्ट के लैफ्टिनेन्ट कर्नल बचित्तर सिंह इस संक्रिया का निर्देशन कर रहे थे ।

लगभग 0830 बजे लैफ्टिनेन्ट कर्नल बचित्तर सिंह ने दो उग्रवादियों को मकान के निकट एक गड्ढे में छिपे देखा । उग्रवादियों ने, यह जान कर कि उन्हें देख लिया गया है, भारी गोलाबारी शुरू कर दी और उन्होंने जंगल की आड़ लेकर भागने की कोशिश की । लैफ्टिनेन्ट कर्नल बचित्तर सिंह उग्रवादियों के इरादों को भांपते हुए तेजी से उनकी ओर पहुंचे तथा एक उग्रवादी को मौत के घाट उतार दिया परन्तु वे स्वयं भी गंभीर रूप से घायल हो गए ।

उस अफसर ने अपने घाव की जरा भी परवाह न करते हुए जूनियर कमीशन अफसर को पुनः तैनाती तथा तीसरे उग्रवादी को घेरने के आदेश दिए और खुद रेंगते हुए आगे बढ़े तथा पैंतरा बदल कर दूसरे उग्रवादी को मार गिराया । इस संक्रिया से तीन विदेशी और एक स्थानीय उग्रवादी मारे गए । बाद में लैफ्टिनेंट कर्नल बचित्तर सिंह की घावों के कारण मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार लैफ्टिनेंट कर्नल बचित्तर सिंह ने अप्रतिम पराक्रम व वीरता का परिचय दिया और भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप उच्चतम बलिदान किया ।

15. 2669395 हवलदार जसकरन सिंह, 9 ग्रेनेडियर
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 सितम्बर, 1996)

27 सितम्बर, 96 को हवलदार जसकरन सिंह, जम्मू और कश्मीर के बारामूला जिले के फेरोजपुर क्षेत्र में स्थित धान के खेतों में घेराबंदी कार्यवाई का सर्वाधिक संवेदनशील भाग आच्छादित करने के लिए जिम्मेदार थे। दो आतंकवादी कमांडर जिन्हें बलाल फेरोजपुर में रोके रखा गया था, रात को धान के खेतों में इस आशा से घुस आए थे कि घने खेतों का फायदा उठाते हुए वे भाग निकलेंगे।

खेतों की तलाशी ली जा रही है, यह देखकर आतंकवादी ने हवलदार जसकरन सिंह पर गोलीबारी शुरू कर दी तथा प्रारंभिक गोलीबारी में ही वे घायल हो गए। अपने घाव की परवाह न करते हुए हवलदार जसकरन सिंह ने बड़ी फुर्ती से अपना स्थान बदलते हुए, बड़े ही कारगर ढंग से आतंकवादियों के भागने का रास्ता रोक लिया और अगले आतंकवादी पर फायर कर, उसे मार गिराया।

आतंकवादी ने दूसरी बार बहुत ही नजदीक से हवलदार जसकरन सिंह पर गोलियों की बौछार कर उन्हें गंभीर चोटें पहुंचाई और बच निकलने के लिए मेंड के पीछे कूद गया। हवलदार जसकरन सिंह कठिन प्रयास से जोर लगा कर मेंड पर आ धमके और भागते हुए आतंकवादी को जिसकी बहुत ही ज्यादा तलाश थी, मार गिराया।

हवलदार जसकरन सिंह ने अकेले ही आतंकवादी संगठन को अक्षम कर दिया। बाद में 27-9-1997 को चोटों की वजह से वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार हवलदार जसकरन सिंह ने अपने जीवन का बलिदान देकर साहस, कर्तव्यनिष्ठा और अदम्य उत्साह का परिचय दिया।

16. जेसी-468232 नायब सूबेदार जया राजन,
21 राजपूताना राइफल्स
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3-10-1996)

ठोस आसूचना के आधार पर 3-4 अक्तूबर, 96 की रात्रि को निलनाथ फार्म मणिपुर के संगाथल गांव में विद्रोहियों को पकड़ने/निष्प्रभावी करने के लिए एक आपरेशन संचालित किया गया। नायब सूबेदार जया राजन को [illegible] एक दस्ते में शामिल थी।

निलनाथ फार्म गांव में 2320 बजे पहुंचने पर पता लगा कि विद्रोही गांव में छिपे हुए हैं। गांव का एक निवासी दस्ते को मार्गदर्शन के लिए सहमत हो गया। कमांडिंग अफसर के आदेश पर नायब सूबेदार जया राजन ने उन मकानों को घेर लिया। भारी वर्षा के कारण फिसलती जमीन और नीचे गहरे, तेजी से बह रहे नाले के कारण दक्षिण की ओर से आगे बढ़ना बहुत मुश्किल कार्य था। जे सी ओ ने घेरा डालने के लिए स्वयं अपने साथियों का नेतृत्व किया और इसके लिए उन्हें उस मकान के पास से गुजरना पड़ा जहां विद्रोही छिपे हुए हैं।

सुरक्षा सेनाओं की उपस्थिति को भांप कर विद्रोहियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप नायब सूबेदार जया राजन घायल हो गए। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना वे रेंगते हुए खिड़की के पास पहुंचे और एक विद्रोही को मार गिराया। नायब सूबेदार जया राजन ने फायरिंग करना जारी रखा और अपने साथियों को निर्देश देना जारी रखा तथा कमांडिंग अफसर से अंततः अपनी जगह छोड़ने का आदेश मिलने तक, वह वहां डटे रहे। इस कार्यवाई के दौरान उनके सहायक कार्य में लगी चोटों के परिणामस्वरूप 04 अक्तूबर, 96 को वे अंततः वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार नायब सूबेदार जया राजन ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए असाधारण वीरता, सर्वोच्च नेतृत्व गुणों तथा कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव का परिचय दिया तथा अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

17. 4467910 सिपाही सुरजीत सिंह
19 राष्ट्रीय राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 11-10-1996)

11 अक्तूबर, 1996 को 19 राष्ट्रीय राइफल्स ने जम्मू व कश्मीर के हपरउवा के वागस गांव में घेराबंदी और तलाशी संक्रिया चलाई। सिपाही सुरजीत सिंह इस अभियान में लाइट मशीन गन नं. 2 के तौर पर बाहरी घेरे का एक हिस्सा थे।

प्रातः 0400 बजे घेरा डाला गया और 0630 बजे तलाशी शुरू की गई। तीन विदेशी उग्रवादियों के एक ग्रुप ने नाले में से बचकर भागने की कोशिश की। विदेशी उग्रवादियों पर 'स्टाफ पार्टी' ने फायर खोल दिया। विदेशी उग्रवादियों ने भी बदले में भारी गोलाबारी की।

सिपाही सुरजीत सिंह अपनी जान की बिलकुल परवाह न करते हुए बगल से गए रेंगते हुए आगे बढ़े और एक विदेशी उग्रवादी को मार डाला। दूसरे विदेशी उग्रवादी ने सिपाही सुरजीत सिंह पर यूनिवर्सल मशीन गन से गोलियों की बौछार कर दी जिससे वे उदर के ऊपर भाग और पेट के बाईं तरफ बहुत सी गोलियों के घाव लगने से जख्मी हो गए। सिपाही सुरजीत सिंह गिर गए परन्तु गंभीर रूप से जख्मी होने के बावजूद उन्होंने दूसरे विदेशी उग्रवादी को मार डाला।

इस प्रकार सिपाही सुरजीत सिंह ने अनुकरणीय साहस, उच्च-कोटि की वीरता व दृढ़ निश्चयता और असाधारण रूप से इस संक्रिया को निष्पादित किया।

18. मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा (आई सी 43848), 34, राष्ट्रीय राइफल्स

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 दिसम्बर 1996)

06 दिसम्बर, 96 को, मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा, जम्मू कश्मीर, श्रीनगर के बड़गांव जिले के गांव में भाड़े के विदेशी सैनिकों के बीच एक तीव्र मुठभेड़ के बीच घिर गई अपनी कम्पनी की एक गश्त टुकड़ी की सहायता के लिए वेगपूर्वक आगे बढ़े ।

अपनी निजी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए, उग्रवादियों की भारी गोलाबारी के बीच यह अफसर उग्रवादियों के नजदीक पहुंच गए । वह अपने व्यक्तियों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए थे । उनके नेतृत्व और सामरिक कुशाग्रता के कारण उनकी कम्पनी ने तीन विदेशी भाड़े के सिपाहियों को मार गिराया ।

चौथा भाड़े का सिपाही, एक नाले में घुस गया और फौजों पर अचूक गोलाबारी करने लगा जिसकी वजह से हताहतों की संख्या बढ़ने लगी । मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए उग्रवादी के निकट जाकर फायर किया, जिसने पलट कर फायर करते हुए उन्हें घायल कर दिया । अपने घाव की परवाह न करते हुए वे अपने घुटनों के बल उठे और उग्रवादी पर फायर करते हुए उसे मार गिराया । परन्तु उग्रवादी की तरफ से चलने वाली अंतिम गोली मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा के सिर पर लगी और जिसके परिणामस्वरूप वह 06 दिसम्बर, 96 को वीरगति को प्राप्त हुए ।

इस प्रकार मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा ने असाधारण वीरता, उच्च-कोटि के नेतृत्व, दृढ़ निश्चय और आत्म-बलिदान की भावना का परिचय दिया ।

19. मेजर मनोज श्रीकांत कारखानिस (आई सी-43431), 5 जम्मू व कश्मीर राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 दिसम्बर, 1996)

13/14 दिसम्बर, 1996 की रात को 5 जे एंड के राइफल्स के मेजर मनोज श्रीकांत कारखानिस नागालैंड के जोतसोमा गांव में भूमिगत छिपने के ठिकानों के विरुद्ध चलाई जा रही संक्रिया के दूसरे दस्ते के प्रभारी थे । इनके नेतृत्व में जा रहा दस्ता छिपने के ठिकाने के नजदीक पहुंचा और वहां पर तैनात भूमिगतों के संतरी को काबू में कर उसे मार गिराया ।

एक बार जब दोनों ओर से गोलाबारी शुरू हुई तो यह अफसर आगे के कमरों में से एक कमरे में गया, दरवाजे को धक्का मार कर खोला और भूमिगत उग्रवादियों को ललकारा । नीचे छिपे एक उग्रवादी ने इन पर गोली चलायी जो मेजर मनोज श्रीकांत कारखानिस की बुलेट प्रूफ जैकेट को छूकर निकल गई और गोलियों के टुकड़ों से इनका चेहरा जख्मी हो गया । अफसर ने अपने घावों की परवाह न करते हुए अपनी ए के-47 राइफल्स से जवाबी गोली चलायी और भूमि के नीचे छिपे दो उग्रवादियों को वहीं मार गिराया । उसके बाद इन्होंने 'हट' जिसमें कि सात कमरे थे, को खाली करवाने के लिए अपने दस्ते को संगठित किया । इस संक्रिया के परिणामस्वरूप एन एस सी एन (के) अंगामी क्षेत्र के अस्थाई मुख्यालयों को विध्वंस कर आठ भूमिगत उग्रवादियों को मार गिराया गया तथा शस्त्र, बड़ी मात्रा में गोली-बारूद, नकदी, मोटर साइकिल और आपत्तिजनक दस्तावेजों को बरामद किया गया ।

इस संक्रिया में मेजर मनोज श्रीकांत कारखानिस ने आगे रहकर इस प्रकार अपने दस्ते का नेतृत्व किया जिससे कि पांच दुर्दान्त भूमिगत उग्रवादी मारे गए और सुनियंत्रित ढंग से की गई भारी गोलीबारी में सिविलियनों की जान और माल को कोई नुकसान नहीं पहुंचा ।

इस प्रकार मेजर मनोज श्रीकांत कारखानिस ने असाधारण वीरता, अदम्य साहस और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

20. जी एस-127660 - ड्राइवर यांत्रिक उपस्कर, डमर बहादुर

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 मार्च, 1997)

हिमांक परियोजना, के ड्राइवर यांत्रिक उपस्कर डमर बहादुर, को उनके डोजर के साथ विश्व के दूसरे नम्बर के ऊंचे मोटर दर्रे रुमत्से - ताशलांगला में ग्रीष्म काल के लिए बर्फ हटाने के कार्य पर तैनात किया गया था ।

उन्होंने यह कार्य अपनी स्वेच्छा से स्वीकार किया था जोकि एक अत्यधिक जोखिमपूर्ण कार्य था । ग्रीष्म काल के लिए बर्फ हटाने का कार्य जल्दी ही आरंभ हो गया था और डमर बहादुर बर्फ की एक मोटी दीवार के मध्य से रास्ता निकालना चाहता था जो कि उस स्थान पर लगभग 30 से 40 फुट तक ऊंची थी । दिनांक 21 मार्च, 1997 को जब वह इस कार्य पर लगे हुए थे तभी सड़क की एक रिटेनिंग वाल टूटने लगी । डोजर घाटी की ओर गिरने लगा, यद्यपि उनका जीवन खतरे में था फिर भी वह डोजर को बचाने के लिए विभिन्न युक्तियों से प्रयास करने लगे । सभी मौजूद कर्मधारी उनके डोजर से कूदकर बाहर आने के लिए चिल्लाने लगे परन्तु उन्होंने अपने डोजर को नहीं छोड़ा । डोजर घाटी में गिर पड़ा तथा वह उसके नीचे कुचले गए ।

ड्राइवर यांत्रिक उपस्कर डमर बहादुर ने अदम्य साहस का परिचय दिया और अपने जीवन का बलिदान देकर सरकार के एक बहुमूल्य उपस्कर को बचाने के लिए अनुकरणीय प्रयास किए ।

एस. के. शरीफ, राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 85-प्रेज/97—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसर को उसके साहसपूर्ण कार्य के लिए "सेना मेडल/आर्मी मेडल का बार" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कैप्टन सुनील श्योराण
(आई सी-51474),
सेना मेडल,
3 पैराशूट रेजिमेन्ट

एस के. शरीफ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 86-प्रेज/97—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कार्मिकों को उनके साहसपूर्ण कार्य के लिए "सेना मेडल/आर्मी मेडल" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लैफ्टिनेन्ट कर्नल नौनाविनाकेरे सिद्धलिंगप्पा योगेश
(आई सी-35708)
6 राष्ट्रीय राइफल्स
(मरणोपरान्त)

2. लैफ्टिनेन्ट कर्नल विजय बहादुर सिंह
(आई सी-34891),
9 राष्ट्रीय राइफल्स

3. लैफ्टिनेन्ट कर्नल हितेन्द्र बहादुर
(आई सी-37294),
12 सिख लाइट इन्फैन्ट्री

4. मेजर विवेक लाल
(आई सी-49955),
20 राजपूताना राइफल्स

5. मेजर संजीव विनायक
((आई सी-46691),
9 असम रेजिमेन्ट

6. मेजर परमजीत सिंह वर्मा
(आई सी-42479),
जम्मू और कश्मीर राइफल्स

7. मेजर एस रामकुमार
(एस एस-35684),
15 गढ़वाल राइफल्स

8. मेजर हरमिंदर पाल सिंह
(आई सी-46762),
1/4 गोरखा राइफल्स

9. मेजर अमित कुमार चैटर्जी
(आई सी-48355),
5/9 गोरखा राइफल्स

10. कैप्टन रवी कुमार धर
(आई सी-46420),
26 आसाम राइफल्स

11. कैप्टन जितेन्द्र सिंह बिष्ट
(आई सी-48997),
36 राष्ट्रीय राइफल्स

12. कैप्टन कुलदीप पाठक
(आई सी-49794),
9 राष्ट्रीय राइफल्स

13. कैप्टन मनीष चतुर्वेदी
(आई सी-52995),
19 कुमाऊं

14. कैप्टन रविंदर सिंह
(आई सी-51157),
15 राजपूत

15. कैप्टन पटियाल दिग्विजय सिंह
(आई सी-50485),
34 राष्ट्रीय राइफल्स

16. कैप्टन करसी मोहम्मद असलम इस्लाम
(एम आर-6695),
सेना चिकित्सा कोर
(मरणोपरान्त)

17. सैकेण्ड लैफ्टिनेन्ट राजेश खुराना
(आई सी-53680),
2 राजपूत
(मरणोपरान्त)

18. सैकेण्ड लैफ्टिनेन्ट पवनप्रीत सिंह ग्रेवाल
(आई सी-54107),
12 सिख लाईट इन्फेन्ट्री

19. सैकेण्ड लैफ्टिनेन्ट पोहिनी
(एम एस-36634),
8 बिहार

20. सैकेण्ड लैफ्टिनेन्ट विजाय सुब्रामनियम
(आई सी-53787),
13 राजपूताना राइफल्स

21. जे सी-184326 सूबेदार भोला राम जाट,
34 राष्ट्रीय राइफल्स

22. जे सी-185824 सूबेदार दिलीप कुमार राजबोंगशी,
35 राष्ट्रीय राइफल्स

23. जे सी-212897 सूबेदार बेलकार सिंह,
7 सिख रेजिमेन्ट

24. जे सी-36171 नायब सूबेदार प्रेम बहादुर क्षेत्री,
3 एन एच आसाम राइफल्स

25. जे सी-412215 नायब सूबेदार विनोद कुमार,
9 पैराशूट रेजिमेन्ट

26. जे सी-211291 नायब सूबेदार बिजेन्द्र सिंह चौहान,
5 महार

27. जे सी-2600042 नायब सूबेदार रतन राय,
6 आसाम राइफल्स

28. 14538857 एच एम टी क्रिस्टोफर एडवर्ड,
16 सिख लाईट इन्फेन्ट्री
(मरणोपरान्त)

29. 5843278 कम्पनी हवलदार
मेजर गंगा बहादुर क्षेत्री,
5/9 गोरखा राइफल्स
(मरणोपरान्त)

30. 162371 कम्पनी हवलदार मेजर धर्म दत्त जोशी,
16 असम राइफल्स

31. 2776272 हवलदार नाले लाला भीमराओ, 12 मराठा लाईट इंफेंट्री (मरणोपरांत)।

32. 2871980 हवलदार धर्मपाल सिंह, 12 राजपूताना राइफल्स (मरणोपरांत)।

33. 4350967 हवलदार खुपखनमांग, 10 असम रेजिमेन्ट (मरणोपरांत)।

34. 3976995 हवलदार दलीप सिंह, 2 डोगरा, (मरणोपरांत)।

35. 4351614 हवलदार जोसेफ सगमा, 35 राष्ट्रीय राइफल्स।

36. 14478983 लांस हवलदार बोध राज, 4 विकास (एस एफ)।

37. 2581163 लांस हवलदार डी गोपाल रेड्डी, 17 मद्रास।

38. 2666419 लांस हवलदार रणधीर सिंह, 9 ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)।

39. 2593113 नायक वेनू सी, 5 राष्ट्रीय राइफल्स।

40. 14482503 नायक बोदू लाल मीणा, 4 विकास (एस एफ)।

41. 4178260 नायक देव सिंह भण्डारी, 13 राष्ट्रीय राइफल्स।

42. 13616363 नायक सड़क सिंह, 3 पैराशूट रेजिमेन्ट।

43. 2881839 नायक राजेन्द्र सिंह, 13 राजपूताना राइफल्स।

44. 10290867 नायक अनिल कुमार बी के, 122 इंफैंट्री बटालियन (टी ए)/मद्रास (मरणोपरांत)।

45. 15103372 लांस नायक एम सिद्धार्थन, 93 एफ डी रेजिमेन्ट (मरणोपरांत)।

46. 2678020 लांस नायक राम सिंह, 8 ग्रेनेडियर्स।

47. 2674540 लांस नायक श्री राम, 9 ग्रेनेडियर्स।

48. 3984636 लांस नायक भारत सिंह, 6 डोगरा।

49. 5750621 लांस नायक खेम बहादुर थापा, 33 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)।

50. 5753563 राइफलमैन दिल बहादुर थापा, 6/8 गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत)।

51. 13758080 राइफलमैन कुलवंत सिंह जंवराल, 8 जम्मू व काश्मीर राइफल्स।

52. 5848636 राइफलमैन बीरेन छेत्री, 5/9 गोरखा राइफल्स।

53. 4074116 राइफलमैन भरत सिंह, 14 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)।

54. 13759024 राइफलमैन संग्राम सिंह, 5 जम्मू व कश्मीर राइफल्स (मरणोपरांत)

55. 104305 राइफलमैन विजय शंकर यादव, 10 आसाम राइफल्स (मरणोपरांत)।

56. 2779853 सिपाही पदमानाभा डी आई, 12 मराठा लाईट इंफैंट्री (मरणोपरांत)।

57. 2484983 सिपाही संतोख राज, 17 पंजाब (मरणोपरांत)।

58. 4360666 सिपाही अमीन नाजर, 12 आसाम रेजिमेन्ट।

59. 4186287 सिपाही गोविंद सिंह, 7 कुमांऊ (मरणोपरांत)।

60. 4271137 सिपाही नीनामा सोमाजी गोमाजी, 13 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)।

61. 4468516 सिपाही इंदरजीत सिंह, 4 सिख लाईट इंफैंट्री (मरणोपरांत)।

62. 15377990 सिग्नलमैन मूला राम चौधरी, 15 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)।

63. 14916956 गनर पीता वेंकटेश्वर राव, 193 फील्ड रेजिमेन्ट।

64. 13617236 पैराट्रूपर उदय सिंह, 9 पैराशूट रेजिमेन्ट।

65. 700100169 हैड कांस्टेबल कश्मीर सिंह, 143 सीमा सुरक्षा बल।

एस. के. शरीफ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 87-प्रेज/97—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कार्मिकों को उनके साहसपूर्ण कार्यों के लिए नौसेना मेडल/नेवल मेडल प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लैफ्टिनेन्ट समीर मिसल, 03549-आर।

2. लैफ्टिनेन्ट गौरीनंदन सदाशिव साल्कर, 03342 डब्ल्यू।

एस. के. शरीफ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 88-प्रेज/97—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसर को उसके साहसपूर्ण कार्यों के लिए "वायुसेना मेडल/एयर फोर्स मेडल" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट विवेक चतुर्वेदी (20788) फ्लाइंग (पायलट)।

एस. के. शरीफ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August, 1997

No. 81-Pers/97.—The President is pleased to approve the award of Ashoka Chakra for most conspicuous bravery to :

SECOND LIEUTENANT PUNEET NATH DATT (IC-53987), 11 GORKHA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 20th July, 1997)

On the 20th July 1997 while combating militancy in the Kashmir Valley, 1/11 Gorkha Rifles launched an operation in Srinagar, based on hard intelligence gathered by Second Lieutenant Puneet Nath Datt.

A group of foreign militants had fortified themselves in a three storied almost impregnable house with a high compound wall all round which dominated the area and afforded an excellent field of fire.

On being surrounded by troops led by Second Lieutenant Puneet Nath Datt, militants brought down heavy fire on the troops. The militants skilfully used the house and the protection it afforded to thwart all attempts by own troops, until Second Lieutenant Puneet Nath Datt unmindful of his personal safety and undaunted by the heavy militant fire, leaped across the boundry wall, charged through a hail of militant bullets, placed and exploded pole charges creating an into the house.

A militant at that instant charged through the opening bringing down effective fire on own troops. Seeing this Second Leiutenant Puneet Nath Datt bounced out of the cover, eliminating the militant by burst of AK fire.

An imense exchange of fire ensured and militatnts opened a point of exit at the rear of the house. Second Lieutenant Puneet Nath Datt realising that some of the trapped militants were attempting to escape, quickly adjusted his position with tactical acumen as well as combat tenacity and placed himself in the escape route. The militants realising the hopeless situation charged out of the house, firing incessantly. Second Lieutenant Puneet Nath Datt displaying unparralleled courage, fired his AK-47 killing the second militant in a most audacious eyeball to eyeball encounter.

Seeing this closed quarter battle yet another militant brought down heavy automatic fire on to the officer hitting him directly on the face from the window above. Bleeding profusely but unmindful of the grievous injury Second Lieutenant Puneet Nath Datt in a dazzling gallant move, lobbed a grenade through the window killing the third militant. This also caused an explosion of huge quantity of explosive and ammunition stashed in the house bringing it down.

The officer had by now killed three hardcore foreign militants single handed and destroyed a well fortified hide out. He finally succumbed to the grievous injuries sustained by him on 20th July, 1997 at 1215 hours.

Second Lieutenant Puneet Nath Datt, thus, displayed most conspicuous act of bravery, exemplary leadership and supreme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army.

S. K. SHERIFF
Jt. Secy. to the President

No. 82-Pres/97.—The President is pleased to approve the award of 'Kirti Chakra' for acts of conspicuous gallantry to :

1. 14917753 SEPOY DAYA SHANKAR,
14 RASHTRIYA RIFLES.
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 5th August, 1996)

On 05th August 1996, Sepoy Daya Shankar, 14 Rashtriya Rifles, was part of a search party during operations at village Laharwalpura in Baramulla District of Jammu & Kashimir.

As the party closed in towards a house where terrorists were hiding, Sepoy Daya Shankar was hit by militant's fire when negotiating an open patch about 50 metres from the house. Realising that his comrades were in a vulnerable situation, undeterred by his own inuries, Sepoy Daya Shankar judging the position of the hold up militant, charged firing from his weapon and killed him in a close fire fight. Sepoy Daya Shankar fell and was hit once again by terrorist's fire. Another holed up militant opened fire preventing further advance. Grivously injured, Sepoy Daya Shankar seeing that only he could reach the militant crawled towards the militant and killed him by a long burst. He thus killed two militants. Two Rifles and One pistol were recovered. Sepoy Daya Shankar was, however, killed in this fight on the spot on 05 August 1996 at 1700 hours.

Sepoy Daya Shankar, thus, displayed conspicuous gallantry, Indomitable spirit and exterme devotion to duty at the cost of his own life.

2. MAJOR KRISHNA MURTHY BALASUBRAMANIAM (IC-42011),
34, RASHTRIYA RIFLES.
(POSTHUMOUS).

(Effective date of the award : 12th August, 1996)

On 12th August 1996, early in the morning, at 0330 hours, Major Krishna Murthy Balasubramaniam, was informed that a dreaded militant was hiding in a house in village Raiyar Yechh Distt. Budgam in Jammu & Kashmir.

The officer lead search party and as he entered the house, the militant opened fire and injured him. The officer acting quickly shot and killed the militant on the spot. Another militant hiding in the adioining room fired through a connecting door, thereby further injuring the officer. Major Krishna Murthy Balasubramaniam, who was grievously wounded, crawled and lobbed a grenade into the second room. The militant who was seriously injured by grenade splinders, tried to fire at Major Balasubramaniam. However, before he could shoot, Major Balasubramaniam shot him dead. Being grievously injured, Major Krishna Murthy Balasubramaniam later on succumbed to his injuries at 0700 hours on 12th August 1996.

Major Krishna Murthy Balasubramaniam, thus, displayed conspicuous gallantry, indomitable spirit and extreme devotion to duty at the cost of his own life.

3. 4072221 RIFLEMAN SANJAY SAHI,
15 GARHWAL RIFLES.
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 5th February, 1997)

On 05-06 February 1997 based on specific information, an operation was lauched in village Zhamai in Phek District of Nagaland. Rifleman Sanjay Sahi was a member of the Commanding Officer's Quick Reaction Team.

On 5th February 1997, the column apprehended a self styled Civil Administrative Officer of a banned Organisation. On the spot questioning of the underground, presence of another UG was revealed. Accordingly, the column proceeded to village Zhamai to the house of another underground.

Rifleman Sanjay Sahi volunteered to lead the team and was tasked to raid the house. On getting no response on knocking, he broke open the door. The moment the door opened a shot was fired from inside on to Rifleman Sanjay Sahi injuring him on his left arm. In the darkness of the night he observed two undergrounds moving out of the rear door.

Disregarding his injury Rifleman Sanjay Sahi chased them and fired from his weapon, killing one underground on the spot. He further charged at the other underground, who turned and fired from his AK-47. This time the burst hit Rifleman Sanjay Sahi injuring him seriously and he fell down instantaneously. Still he continued firing from his weapon, thereby preventing the underground from snatching his weapon, and also from causing casualties to his comrades. After accomplishing his mission, this brave soldier breathed his last at 0330 hours on 6th February 1997.

Rifleman Sanjay Sahi, thus, displayed indomitable courage, single minded dedication beyond the call of duty and made supreme self sacrifice in his fight with the undergrounds.

S. K. SHERIFF
Jt. Secy. to the President

No. 83-Pres 97.—The President is pleased to approve the award of 'Vir Chakra' for the undermentioned person for acts of gallantry in the face of enemy :

8290642 NAIK VED PRAKASH,
15 RAJPUT.
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 31st August, 1996)

On 31st August 96, heavy enemy shelling came down on a post in the Northern part of Siachen Glacier. Since the enemy fire persisted it was felt that effective fire be brought down on enemy position in retaliation. Naik Ved Prakash alongwith an officer moved out and took position in the open neglecting their personal safety and opened fire of 84mm Rocket Launcher on enemy post.

Naik Ved Prakash then started shuttling between the ammunition bunker and the firing position. On his third shuttle, an enemy shell landed in close proximity of the bunker and he was hit by a splinter in the chest. Despite his serious injury he attempted another shuttle but collapsed near the ammunition bunker, and eventually succumbed to his injury at 2245 hours.

Naik Ved Prakash with utter disregard to his personal safety displayed gallantry and bravery of the highest order in the face of the enemy and made supreme sacrifice.

S. K. SHERIFF
Jt. Secy. to the President

No. 84-Pres/97.—The President is pleased to approve the award of 'Shaurya Chakra' for the undermentioned persons for acts of gallantry.

1. FLIGHT LIEUTENANT SANDEEP KHAJURIA (20291)
AERONAUTICAL ENGINEERING, (ELECTRONICS)

(Effective date of the award : 2nd March, 1993)

Flight Lieutenant Sandeep Khajuria was commissioned in the IAF in September 1989. He is presently posted at a signal Unit in Air Force.

On the night of 2nd March, 1993, while he was working in GCA, from the conversation of the controllers on duty he learned that an aircraft piloted by Fg Offr SS Chouhan (20996) F(P) had crash landed on the side of the runway. He immediately set out for the crash landing site. On reaching the site, which took him about 10 minutes, he observed that the fire fighting was in progress and the pilot was still in the cockpit with canopy closed. Notwithstanding the risk to his personal life, he advanced to the canopy to rescue the pilot. The men who were only waiting for such daring leadership also ignored the risk of being engulfed by the fire and joined him in rescuing the pilot who was in an unconscious state. The aircraft fuel tank exploded immediately following the rescue.

Flight Lieutenant Sandeep Khajuria, thus, ignoring personal safety provided appropriate leadership at the time of a crisis saved a life.

2. SHRI PASUPATI NATH RAI,
ALLAHABAD BANK,
PATNA (BIHAR).

(Effective date of the award : 19th July, 1995)

M/s. Pataliputra Trading Corporation, one of the clients of Allahabad Bank, Main Branch, Patna, deposit Rs. 2/3 lacs in cash 3/4 times every week. On 19-7-1995, at about 10.25 A.M., the salesman of the company arrived in a matador van at the Branch. Four miscreants, who had apparently watched the movements of the salesman of the firm frequently coming to the Bank for deposit of huge cash, lay in wait and as soon as the rear door of the van was opened, three miscreants carrying arms in their hands pounced upon the salesman. One of the criminals fired a shot at salesman which grazed the flesh near his right eye. In the meantime, one of armed criminals snatched the bag containing money from the salesman and fled.

Shri Pasupati Nath Rai, Clerk-cum-Cachier in the Bank who was the Chief Manager of the Branch at that moment rushed out on hearing commotion outside. Without waiting even for a split second and totally ignoring the risk to his life, he chased the armed miscreants. The fact that he was unarmed did not deter him. Inspired by his selfless and heroic action some policemen and members of the public also joined him in the pursuit. Shri Rai eventually caught hold of one of the miscreants and grappled with him. This led to nabbing of the other miscreants as well. Two of the four miscreants were killed in cross fire with the police.

Shri Rai showed exemplary courage and bravery in grappling and apprehending an armed dacoit.

3. CAPTAIN SANTANU NAG (IC-44269),
3 RASHTRIYA RIFLES,
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12th March, 1996)

On 12th March 1996, Captain Santanu Nag of 3 Rashtriya Rifles while inside a house in Ashashpur, District Anantnag in Jammu & Kashmir for carrying out search with his team, came under sudden heavy volume of automatic grenade fire. Two leading members of his party were instantly injured. While trying to swiftly extricate these two casualties from the line of fire, Captain Santanu Nag himself sustained Gun Shot Wound.

Captain Santanu Nag, appreciating that evacuating the casualties immediately was essential, ordered members of the party to leave the building. Simultaneously, realising that leaving the militants alone would allow them to cause further damage, he, at that despite having been shot in his leg and thigh chose to lead from the front. He charged towards the hideout firing from his rifle. Exhausting his ammunition he dropped his rifle and bare handed grappled with the two militants and pushed them back, thereby shielding his injured search party. While doing so he got a bullet through his armpit into his chest and died.

Captain Santanu Nag, thus, displayed a rare act of bravery and courage, far beyond the call of duty in saving the lives of his colleagues at the cost of his own life.

4. 4057065 COMPANY HAVILDAR MAJOR DHYAN SINGH,
3, RASHTRIYA RIFLES,
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12th March, 1996)

On 12th March 1996, Company Havildar Major Dhyan Singh, posted with 3 Rashtriya Rifles was member of a search party in Ashashpur, Distt Anantnag Jammu & Kashmir.

While searching a house Company Havildar Major Dhyan Singh and an other rank entered a room and were instantly injured by a sudden heavy volume of fire. His company commander and his platoon commander, while trying to extricate the other rank from the room, also sustained gun shot wounds.

Injured, Company Havildar Major Dhyan Singh retreated from the room firing from his rifle. He was ordered to leave the building immediately. He seeing his company commander charging into the room firing from his rifle. With total disregard to his personal safety rushed into the room behind his company commander. In a split second one terrorist broke free and shot at his company commander. Company Havildar Major Dhyan Singh, leaped between the fire and his company commander and took the burst on his body, a fateful bullet getting in his spine. He

fell for the man who had taught him the virtues of a true soldier.

Company Havildar Major Dhyan Singh, thus displayed an act of valour and bravery in the face of danger in saving the life of his comrade at the cost of his own life.

5. Shri Parsi Jagan,
State Bank,
Vennel (Andhra Pradesh)

(Effective date of the award : 6th May, 1996)

On 6th May 1996, an Armed dacoity took place at Vennel 'B' branch of State Bank of Hyderabad in Nizamabad district of Andhra Pradesh. After the customers left the premises around position in the premises around 2.40 PM, three persons armed with pistols and one knife took position in the premises. One miscreant stood before the cash counter threatening the Head Cashier, while the other person with another pistol stood near the Branch Manager and the third person stood near the wicket gate in the Banking Hall pointing a knife at the Daftry. They declared that they are from 'Bheemgal Dalam' of Naxalites. Shri P. Jagan, Branch Manager, asked the persons to write their protest in the scroll book and not to resort to looting the public money. The miscreants did not agree. One person came on the front side of the cash counter and made the other person to collect the cash while covering the Branch Manager. They collected approximately Rs. 1.67 lacs and filled it in a bag brought by them. With a view to creating a scare, they fired two bullets, one pointing at the Branch Manager and the other in the air to keep the branch staff away. As the culprits stopped for a while, Shri Jagan Jumped and held the neck of a culprit who lost his grip over the cash bag. On seeing this, the other two miscreants came to the rescue of their person who had lost his grip over the bag. In the scuffle, the cash bag was torn away and some cash fell on the ground. At this stage, the Head Cashier and the Daftry rushed to help the Branch Manager and restored the fallen cash and pushed it into the cash cabin. On hearing the shouts of the branch staff, the villagers who were moving on the road rushed to the Bank. At this stage, two culprits fled away in the car parked out side the branch premises. One person was apprehended. He was overpowered and pushed into a room. The police subsequently apprehended the remaining two culprits also. The entire cash was saved.

Shri Parsi Jagan, Branch Manager, showed exceptional bravery, determination, presence of mind and devotion to duty in overpowering the armed dacoits.

6. Shri K. Dattatreya Shetty,
Syndicate Bank,
Narendra (Karnataka)

(Effective date of the award : 8th June, 1996)

On 8th June, 1996 there was an attempted robbery at Narendra Branch of Syndicate Bank. The robbery attempt was followed by Shri K. Dattatreya Shetty, Manager of the Branch and Shri Yashwanth Doddamani, sub-staff member.

Two robbers, armed with pistols, entered the Bank at about 11.30 AM. One armed robber aimed his pistol at Shri Shetty, Branch Manager and asked him to hand over the cash. The second robber pointed his pistol at the staff members and customers and ordered them to go out. When the customers started running out, the first robber, who was aiming his pistol at the Branch Manager, fired at him. Fortunately, it was misfire. Taking advantage of this, Shri Shetty pounced upon the robber, grappled with him and neutralised him. Shri Doddamani, Sub-staff member of the Branch was standing behind the second robber at that moment. As soon as he saw Shri Shetty grappling with the first robber, he threw a stool at the second robber. On being hit by the stool, the second robber was also imbalanced and neutralised by Shri Doddamani and others. Both the robbers were then overpowered by the staff members and customers and handed over to the police.

Shri Dattatreya Shetty showed bravery, presence of mind and devotion to duty and foiled the robbery attempt unmindful of the risk involved to his own life.

7. Shri Yashwant Doddamani,
Syndicate Bank,
Narendra (Karnataka)

(Effective date of the award : 8th June, 1996)

On 8th June, 1996, there was an attempted robbery at Narendra Branch of Syndicate Bank. The robbery attempt was foiled by Shri K. Dattatrey Shetty, Manager of the Branch and Shri Yashwant Doddamani, sub-staff member.

Two robbers, armed with pistols, entered the Bank at about 11.30 AM. One armed robber aimed his pistol at Shri Shetty, Branch Manager and asked him to hand over the cash. The second robber pointed his pistol at the staff members and customers and ordered them to go out. When the customers started running out, the first robber, who was aiming his pistol at the Branch Manager, fired at him. Fortunately, it was misfire. Taking advantage of this, Shri Shetty pounced upon the robber, grapped with him and neutralised him. Shri Doddamani, Sub-staff member of the Branch was standing behind the second robber at that moment. As soon as he saw Shri Shetty grappling with the first robber, he threw a stool at the second robber. On being hit by the stool, the second robber was also imbalanced and neutralised by Shri Doddamani and others. Both the robbers were then overpowered by the staff members and customers and handed over to the police.

Shri Doddamani showed presence of mind and bravery under adverse circumstances and was instrumental in disarming the second robber who otherwise would have fired at the staff members and customers endangering their lives.

8. Major Jayant Kumar Tiwari,
(IC-40882),
1/5 Gorkha Rifles

(Effective date of the award : 31st July, 1996)

On 31st July 1996 information was received about some room militants hiding in an area. After stops were put in position, search operation was commenced at 4.30 hours from Watner Gali in Jammu & Kashmir under the Command of Maj. Tiwari.

At 0700 hours the leading scout saw a group of five to six militants. On being tasked by the Company Commander an other Rank opened fire killing two militants while the other militants fled.

Major Jayant Kumar Tiwari, after a hot chase, shot dead one foreign militant but in the process he sustained an AK burst on his left arm. Meanwhile an Other Rank engaged the militants to divert attention. In spite of being grievously injured, Major Jayant Kumar Tiwari charged at the fourth militant and shot him dead.

Major Jayant Kumar Tiwari undaunted by the grievous injury and under heavy fire motivated his team perform to zenith resulting in killing of four militants and recovery of considerable amount of arms and ammunition.

Major Jayant Kumar Tiwari, thus displayed exceptional gallantry and bravery of the highest order.

9. 14694721 Naik/Driver
Plant Mechanical, Transport,
Visheshi Singh,
Border Road Organisation

(Effective date of the award : 2nd August, 1996)

Naik/Driver Plant and Mechanical Transport Visheshi Singh Project Pushpak was detailed as security guard on a road at Khantlang in Tripura.

On 2nd August 96 at 0730 hrs, he was detailed to accompany Assistant Engineer VS Choughle who was carrying Rs. 1,41,500/- for payment. At about 1230 hrs when the party reached a bend on the road, they found the road blocked with boulders. Shri Choughle alongwith the driver got down from the vehicle to remove the boulders. They came under heavy small arms fire and both of them fell injured. As soon as he heard the gun fire and saw the officer and driver lying on the ground injured, Naik Visheshi Singh

jumped out of the vehicle. Unmindful of his own safety he charged at the six militants and opened fire injuring one. After further exchange of fire, the militants were taken aback by his courage and fearlessness and fled leaving behind a country made pistol.

Naik DPMT Visheshi Singh thus displayed exceptional courage, conspicuous bravery, presence of mind and devotion to duty. With utter disregard to his personal safety, he saved human lives and Government money.

10. 14486426 Naik Jangbir Singh,
5 Det/EC Liaison Unit
(Posthumous)

(Effective date of the award : 19th August 1996)

Naik Jangbir Singh of Int Corps was tasked to obtain actionable intelligence pertaining to activities of hard core ULFA cadres in and around village Dharamtalla, Barpeta in Assam. A hit team was deployed alongwith Naik Jangbir Singh to react to available intelligence.

Information about presence of a linkman, and a number of ULFA cadres, was obtained by Naik Jangbir Singh through his network of informers. ON 19/20 August 96 night, the hit team planned an operation to raid a cluster of three houses reportedly being used as a hideout.

As the team surrounded the cluster of huts, Naik Jangbir Singh volunteered to lead a sub-team. As they moved closer to the hut, fire was opened on the team from two sides. Boxed in, the team leader and Naik Jangbir Singh immediately opened retaliatory fire in a counter ambush reaction.

In the ensuing exchange of fire Naik Jangbir Singh was hit by a burst of fire. Though seriously wounded, he crawled ahead to the opposite end of the lane alongwith the team leader and kept on firing till he succumbed to his injuries on 20th August 96. The move to the end of the lane by Naik Jangbir Singh forced the militants to abandon their hideout and escape.

Naik Jangbir Singh, thus displayed heroic act of valour, indomitable will and utter disregard to his personal safety in his fight against the hard core ULFA cadres.

11. Dashrath,
LS CD II, 173801-B

(Effective date of the award : 22nd August, 1996)

Dashrath, LS CD II, was a member of the MARCO detachment deployed in Jammu & Kashmir for OP Rakshak at Wulur Lake.

On 22nd Aug 96 while conjointly carrying out cordon and search operation with 13 RR Battalion to neutralise Kashmiri Militants harboured in the village Talamulla the troops of 13 RR Battalion came under unexpectedly heavy unsuppresible fire from the militants. Appreciating the vulnerability of the prevailing tactical situation Lt Gaurinandan Sadashiv Salkar, quickly mobilised his force to open up another corridor of attack on the militants from the water front. At this stage Dashrath, LS who was the LMG man of the team inflicated heavy fire on the militants and snatched away the tactical advantage that militants were enjoying so far. During the operation one hard core militant was killed.

Once our troops gained tactical advantage, the team moved deep inside the marsh to lay ambush on militants fleeing the area and waited for four hours in extremely inhospitable conditions. At about 0645 hours, one militant was sighted escaping into the marshy swamps of the lake. Immediately, Dashrath, LS alongwith his team leader closed on the militant and tried to apprehend him alive. As the militant who had camouflaged himself, tried to escape, Dashrath, LS pounced on him with complete disregard to his personal safety and physically apprehended him thereby displaying exceptional courage, relentless will power and presence of mind in the face of the militants.

Dashrath, LS CD II, thus, displayed selfless act of conspicuous bravery in fighting with the militants.

12. Flight Lieutenant Sandeep Jain (19534) Flying (Pilot)
(Posthumous)

(Effective date of the award : 26th August, 1996)

Flight Lieutenant Sandeep Jain was posted with a Helicopter Unit since 19th Dec 94. He was a disciplined and devoted Officer of Indian Air Force.

During the month of August 1996 Flt Lt S Jain was on detachment to carry out air maintenance in OP Meghdoot area. During this period enemy had redeployed the forces in Southern Glacier area and had established new bunkers at commanding positions directly threatening Indian Army posts. Accessibility to our posts had also become extremely difficult since helicopter route to the posts was under the enemy's constant watch and threat. It was a matter of great concern, since our posts could not be air maintained under the circumstances. Withdrawing our forces was considered against the interest of National Security.

It was, therefore, decided to launch a few dedicated air maintenance sorties to maintain crucial post at Hoshiyar. Flt Lt S Jain was detailed as Captain of these special missions. He was throughly briefed about the risk involved. Notwithstanding the risk, dedicated crew under the Command of Flt Lt S Jain undertook the challenging task bravely and intelligently. Two such missions were carried out successfully inspite of enemy's intereference. During the third sortie on 26th Aug 96 after the load was dropped helicopter was engaged by the enemy ground forces and shot down killing Flt Lt S Jain and his crew.

Flight Lieutenant Sandeep Jain showed exemplary courage and dedication by undertaking extremely difficult task in the face of known enemy threat and made ultimate sacrifice for the national interest.

13. 9415627 Havildar Kishore Rai, 6/11 Gorkha Rifles

(Effective date of the award : 3rd September, 1996)

On 3rd September 1996, at approximately 1400 hrs, Havildar Kishor Rai was leading a search/area domination patrol through a steep Nala on own side of the line of Control in the Pir Panjal Ranges (High Altitude Area) of Jammu and Kashmir.

The visibility was very poor. While searching the Nala close to a steep cutting, the patrol suddenly encountered heavily armed militants. An intense exchange of fire immediately ensured. The ANEs opened fire. In the continuous and heavy exchange of fire the leading scout suffered gun shot wounds in his abdomen. Inspite of suffering one casualty, Havildar Kishore Rai maintained continuous offensive contact with the militants. By 1700 hrs the militants came under heavy pressure from Havildar Kishore Rai's patrol and retreated into the denser part of the jungle.

In the meanwhile party was ordered to close in under covering fire provided by Havildar Kishore Rai.

The party soon came under accurate militant fire and could not close in further. It was getting dark and Havildar Kishor Rai realising that the militants would attempt to escape through the dense jungle in darkness, ordered rest of his patrol to engage the militants and he himself crawled through intense militant fire overcoming the most inhospitable terrain and closed in with the militant. He beheaded three militants who were holding up the party's advance. This brave act of Havildar Kishor Rai ultimately resulted in the elimination of seven hard core militants in an intense gun battle which lasted approximately five hours.

Havildar Kishor Rai, thus, displayed exceptional gallantry and bravely of the highest order in fighting with the militants.

14. Lieutenant Colonel Bachittar Singh (IC-37392), 35 Rashtriya Rifles (Posthumous)

(Effective date of the award : 29th September, 1996)

On 29 September 1996, a seek encounter operation was conducted in village Bugur in District Budgam of Jammu & Kashmir. Lieutenant Colonel Bachittar Singh, was controlling the operation.

At approximately 0830 hours, Lieutenant Colonel Bachittar Singh spotted two militants hiding in a depression in the vicinity of a house. On realising that they have been spotted, militants opened heavy fire and attempted to escape taking cover of wooded area. Lieutenant Colonel Bachittar Singh sensing the intention of militants, swiftly closed in with the militants, shot dead one militant. In the exchange of fire he sustained serious injuries.

The officer showing utter disregard to his injury, ordered a Junior Commissioned Officer to redeploy and pin down the third militant and himself crawled up, out manoeuvred and shot dead the second militant. In this operation. three foreign militants and one local militant were killed. Lieutenant Colonel Bachittar Singh later succumbed to his injuries.

Lieutenant Colonel Bachittar Singh, thus, displayed act of unmatched valour, bravely and made the supereme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army.

15. 2669395 Havildar Jaskaran Singh, 9 Grenadiers (Posthumous)

(Effective date of the award : 27th September, 1996)

On 27 September 96, Havildar Jaskaran Singh was responsible to hold the most vulnerable part of the cordon in the paddy fields in Perozpur in Baramulla District, Jammu and Kashmir. Two terrorist commanders, who were holed up a in Perozpur, slipped into the paddy fields during the night with the hope to use the dense growth to their advantage to get away.

On seeing the fields being searched, the terrorist charged firing at Havildar Jaskaran Singh hitting him with the initial volley. Unmindful of his injury, Havildar Jaskaran Singh swiftly changed position effectively cutting off escape of the terrorists and killed the leading terrorist.

The terrorist fired a second volley at point blank range at Havildar Jaskaran Singh injuring him critically and dropped behind a bund in a bid to get through. Hav Jaskaran, with a supreme effort pulled himself up onto the bund and with calm composure shot dead the fleeing terrorist who was the most wanted terrorist.

Havildar Jaskaran Singh single handedly decapacitated the terrorist organisation. He however later succumbed to his injuries on 27-9-1996.

Havildar Jaskaran Singh, thus displayed extra ordinary individual act of courage, dedication and indomitable spirit at the cost of his own life.

16. JC-468232 Naib Subedar Jaya Rajan, 21 Rajputana Rifles (Posthumous)

(Effective date of the award : 3rd October, 1996)

On the night of 03-04 October 1996 Based on hard intelligence an operation was launched to apprehend/neutralise the insurgents in village Khonshaghul in Lilanwai-Phai (Manipur). A platoon under Naib Subedar Jaya Rajan was part of one of the columns.

On reaching village Lilanwaiphai at 2320 hours it was revealed that insurgents were hiding in the village. One villager agreed to guide the columns. On orders of the Commanding Officer Naib Subedar Jaya Rajan cordoned-off these houses. The approach from the South was very difficult with slippery surface due to the heavy rain and a deep fast flowing nala below. The JCO personally led his men to establish the codon for which he had to pass in close proximity of the house in which the insurgents were hiding.

Realising the presence or security forces, the insurgents opened heavy volume of fire, as a result of which Naib Subedar Jaya Rajan was injured. Showing utter disregard to his personal safety, he crawled, reached near the window and shot dead one insurgent.

He kept firing and giving directions to his men and did not leave his place till finally ordered by the Commanding Officer to do so. His courageous action prevented the insurgents from escaping and lead to killing of two more insurgents. His courageous action led eventually to his own death on 04 October 96 due to the injuries sustained by him.

Naib Subedar Jaya Rajan, thus, displayed exceptional gallantry, superb leadership qualities, dedication to duty in disregard to his personal safety and made supereme sacrifice.

17. 4467910 Sepoy Surjit Singh, 19 Rashtriya Rifles

(Effective date of the ward : 11th October, 1996)

On 11 October 1996 19 Rashtriya Rifles carried out cordon and search operation in village Wagat in Hapruda in Jammu and Kashmir Sepoy Surjit Singh was part of the outer cordon as Light Machine Gun Number 2 in the operation.

The cordon was established by 0400 hours and search commenced at 0630 hours. A group of three foreign militants tried to escape through a Nalla. They were fired upon by the Stop Party. The militants retaliated with heavy volume of fire.

Sepoy Surjit Singh with utter disregard to his personal safety went from a flank, crawled forward and killed one foreign militant. Second foreign militant fired a burst of Universal Machine Gun on Sepoy Surjit Singh due to which he sustained multiple gun shot wound over epigastrium and left side of abdomen. Sepoy Surjit Singh fell down but despite his grievous injury, he killed the second foreign militant.

Sepoy Surjit Singh, thus, displayed exemplary courage, abundant bravely, tenacity and outstanding performance in the operation.

18. Major Chandra Shekher Misra (IC-43848), 34 Rashtriya Rifles (Posthumous).

(Effective date of the award : 6th December, 1996)

On 06 December 1996 Major Chander Shekher Misra, rushed to the aid of one patrol of his Company which was involved in a fierce encounter with foreign mercenaries at village Datsan, Distt Badgam Jammu & Kashmir.

With utter disregard to his own safety, under heavy militant fire the officer quickly closed in with the militants. He was a source of inspiration for his men. Due to his leadership and tactical acumen his Company killed three foreign mercenaries.

The fourth mercenary got into a nallah and fired accurately at the troops causing serious casualties. Major Chander Shekher Misra, understanding the gravity of the situation, moving close, fired at the militant, who fired back injuring him. Without caring for his injury, he got up to his knees, fired at the militant and killed him. However, the last fussilade of bullets from the militant hit Major Shekher Misra in the head and he succumbed to his injuries on 06 December 1996.

Major Chander Shekher Misra, thus, displayed exceptional gallantry, sterling qualities of leadership, dogged determination and spirit of self sacrifice.

19. Major Manoj Shrikant Karkhanis (IC-43431), 5 Jammu and Kashmir Rifles

(Effective date of the award : 14th December, 1996)

On the night of 13/14 December 1996 Major Manoj Shrikant Karkhanis of 5 JAK Rifles was incharge of second column for operation against underground hideout at Jotsoma village in Nagaland. The column led by him closed in around the hideout and overpowered and killed the sentry of undergrounds.

Once the exchange of fire started, the officer approached one of the front rooms, pushed open the door and challenged the undergrounds. One of the undergrounds fired at him. The bullets grazed through his bullet proof jacket and caused splinter injuries on his face. The officer with utter disregard to his injuries fired back with his AK-47 Rifle and killed two undergrounds on the spot. Thereafter, he organised his column for clearance of the hut, consisting of seven rooms.

This operation led to destruction of temporary Headquarters of Angami Region of NSCN(K) and killing of eight undergrounds, recovery of weapons, large quantity of ammunition, cash, motorcycle and incriminating documents. In this operation Major Manoj Shrikant Karkhanis led his column from front that killed five hardcore undergrounds and still exercised great fire control ensuring no loss or damage to civilians or their property.

Major Manoj Shrikant Karkhanis, thus displayed exceptional gallantry, indomitable spirit and devotion to duty.

20. GS-127660W Driver,
Mechanical Equipment
Damar Bahadur
(Posthumous)

(Effective date of the award : 21st March, 1997)

Driver Mechanical Equipment (DME) Damar Bahadur of Project Himank was deployed alongwith his dozer for summer snow clearance at Rustse-Taglangla, the world's second highest motorable pass.

He volunteered for this task which is the toughest stretch for snow clearance. Summer snow clearance was started early and Damar Bahadur carved a passage through the daunting wall of snow which was 30 to 40 feet high at places. On 21 March 97, while on this job a retaining wall gave way. The dozer started sliding towards the valley. Even though his life was in danger, yet, he started manoeuvring the dozer to save it. All personnel present shouted at him to jump out, but he did not abandon his dozer. The dozer toppled into the valley and he was crushed under it.

Driver Mechanical Equipment Damar Bahadur displayed indomitable courage and made exemplary efforts to save an expensive equipment of the Government at the cost of his own life.

S. K. SHERIFF, Jt. Secy. to the President

No. 85-Pres/97—President is pleased to approve the award of 'Bar to Sena Medal/Army Medal' to the undermentioned officer for acts of courage :

1. Captain Sunil Sheoran (IC-51474), SM,
3 Parachute Regiment

S. K. SHERIFF, Jt. Secy. to the President

No. 86-Pres/97.—President is pleased to approve the award of Sena Medal/Army Medal to the undermentioned officers/personnel for acts of courage :

1. Lieutenant Colonel Nonavinakere Siddalingappa Yogesh (IC-35708),
6 Rashtriya Rifles (Posthumous).

2. Lieutenant Colonel Vijay Bahadur Singh (IC-34891), 9 Rashtriya Rifles.

3. Lieutenant Colonel Hitendra Bahadur (IC-37294), 12 Sikh Light Infantry.

4. Major Vivek Lall (IC-49955),
20 Rajputana Rifles.

5. Major Sanjeev Shenoy (IC-46691).
9 Assam Regiment.

6. Major Paramjit Singh Verma (IC-42479),
Jammu and Kashmir Rifles.

7. Major S Ramkumar (SS-35684),
15 Garhwal Rifles.

8. Major Harminder Pal Singh (IC-46762),
1/4 Gorkha Rifles.

9. Major Amit Kumar Chatterjee (IC-48355),
5/9 Gorkha Rifles.

10. Captain Ravi Kumar Dhar (IC-46420),
26 Assam Rifles.

11. Captain Jitendra Singh Bisht (IC-48997),
36 Rashtriya Rifles.

12. Captain Kuldip Pathak (IC-49794),
9 Rashtriya Rifles.

13. Captain Manish Chaturvedi (IC-52995),
19 Kumaon.

14. Captain Ravinder Singh (IC-51157),
15 Rajput.

15. Captain Patil Digvijay Singh (IC-50485),
34 Rashtriya Rifles.

16. Captain Qureshi Mohd Aslam Islam (MR-06695),
Army Medical Corps (Posthumous).

17. Second Lieutenant Rajesh Khurana (IC-53680),
2 Rajput (Posthumous).

18. Second Lieutenant Pawan Preet Singh Grewal (IC-54107), 12 Sikh Light Infantry.

19. Second Lieutenant P Hani (SS-36634),
8 Bihar.

20. Second Lieutenant Vijayu Subramaniam (IC-53787), 13 Rajputana Rifles.

21. JC-184326 Subedar Bhola Ram Jat,
34 Rastriya Rifles.

22. JC-185824 Subedar Dilip Kumar Rajbongshi,
35 Rashtriya Rifles.

23. JC-212897 Subedar Balkar Singh,
7 Sikh Regiment.

24. JC-36171 Naib Subedar Prem Bahadur Chhetri,
3 NH Assam Rifles.

25. JC-412215 Naib Subedar Vinod Kumar,
9 Parachute Regiment.

26. JC-211291 Naib Subedar Brijendra Singh Chauhan,
5 Mahar.

27. JC-2600042 Naib Subedar Ratan Rai,
6 Assam Rifles.

28. 14538857 HMT Christopher Edward.
16 Sikh Light Infantry (Posthumous).

29. 5843278 Company Havildar Major Ganga Bahadur Chhetri, 5/9 Gorkha Rifles (Posthumous).

30. 162371 Company Havildar Major Dharam Dutt Joshi,
16 Assam Rifles.

31. 2776272 Havildar Nale Lala Bhimrao,
12 Maratha Light Infantry (Posthumous).

32. 2871980 Havildar Dharampal Singh,
12 Rajputana Rifles (Posthumous).

33. 4350967 Havildar Khupkhangam,
10 Assam Regiment (Posthumous).

34. 3976995 Havildar Dalip Singh,
2 Dogra (Posthumous).

35. 4351614 Havildar Joseph Sangma,
35 Rashtriya Rifles.

36. 14472983 Lance Havildar Bodh Raj,
4 Vikas (SF).

37. 2581163 Lance Havildar D Gopal Reddy, 17 Madras.
38. 2666419 Lance Havildar Randhir Singh, 9 Granadiers (Posthumous).
39. 2593113 Naik Venu C, 5 Rashtriya Rifles.
40. 14482503 Naik Babu Lal Meena, 4 Vikas (SF).
41. 4178260 Naik Dev Singh Bhakuni, 13 Rashtriya Rifles.
42. 13616363 Naik Kharak Singh, 3 Parachute Regiment.
43. 2881839 Naik Rajendra Singh, 13 Rajputana Rifles.
44. 10290867 Naik Anil Kumar BK, 122 Infantry Battalion (TA)/Madras (Posthumous).
45. 15103372 Lance Naik M Siddharthan, 93 FD Regiment (Posthumous).
46. 2678020 Lance Naik Ram Singh, 8 Grenadiers.
47. 2674540 Lance Naik Shri Ram, 9 Grenadiers.
48. 3984636 Lance Naik Bharat Singh, 6 Dogra.
49. 5750621 Lance Naik Khem Bahadur Thapa, 33 Rashtriya Rifles. (Posthumous).
50. 5753563 Rifleman Dil Bahadur Thapa, 6/8 Gorkha Rifles (Posthumous)
51. 13758080 Rifleman Kulwant Singh Bandral, 8 Jammu and Kashmir Rifles.
52. 5848636 Rifleman Bigen Chhetri, 5/9 Gorkha Rifles.
53. 4074116 Rifleman Bharat Singh, 14 Rashtriya Rifles (Posthumous).
54. 13759024 Rifleman Sangram Singh, 5 Jammu & Kashmir Rifles (Posthumous).
55. 104305 Rifleman Vijay Shankar Yadav, 10 Assam Rifles (Posthumous).
56. 2779853 Sepoy Padmanabha BY, 12 Maratha Light Infantry (Posthumous).
57. 2484983 Sepoy Sandokh Raj, 17 Punjab (Posthumous).
58. 4360666 Sepoy Ameen Nazar, 12 Assam Regiment.
59. 4186287 Sepoy Govind Singh, 7 Kumaon (Posthumous).
60. 4271137 Sepoy Ninama Somaji Gomaji, 13 Rashtriya Rifles (Posthumous).
61. 4468516 Sepoy Inderjit Singh, 4 Sikh Light Infantry (Posthumous).
62. 15377990 Signalman Moola Ram Choudhary, 15 Rashtriya Rifles (Posthumous).
63. 14916956 Gunner Peeta Vankateshwar Rao, 193 Fd Regiment.
64. 13617236 Paratrooper Udai Singh, 9 Parachute Regiment.
65. 700100169 Head Constable Kashmir Singh, 143 Border Security Force.

S. K. SHERIFF,
Jt. Secy. to the President

No. 87—Pers/97.—President is pleased to approve the award of Nao Sena Medal/Naval Medal to the undermentioned officers for acts of courage:

1. Lieutenant Samir Mittal, 03549-R.
2. Lieutenant Gaurinandan Sadashiv Salkar, 03342-W.

S. K. SHERIFF,
Jt. Secy. to the President

No. 88—Pers/97.—President is pleased to approve the award of Vayu Sena Medal/Air Force Medal to the undermentioned officer for acts of courage:

1. Flight Lieutenant Vivek Chaturvedi (20788) Flying (Pilot).

S. K. SHERIFF,
Jt. Secy. to the President

[illegible] भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1997
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and published by the Controller of Publications, Delhi, 1997